वाप्कोस दर्पण

त्रैमासिक गृह पत्रिका

4 मील ब्रिज सीवर पाइपलाइन का आरम्भ, फिजी

इंद्रधनुष विधि द्वारा निकर्षण करते हुए
डीसीआई ड्रेजर-XX, पश्चिम बंगाल

राजस्थान, उदयपुर जिले में सोलर स्ट्रीट लाइट का संस्थापन
और छात्रों को सोलर लालटेनों का वितरण

अंक 97, अप्रैल-जून 2020

निर्माण स्थलों पर खाद्य राशन/ आवश्यक सामान/मास्क का वितरण

वाप्कोस दर्पण

अप्रैल से जून, 2020 **अंक - 97**

<u>संरक्षक</u>

देवश्री मुखर्जी
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक

<u>तकनीकी संपादन सलाहकार</u>

अमिताभ त्रिपाठी
वरि. कार्यकारी निदेशक

<u>संपादन मण्डल</u>

अनुपम मिश्रा
निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास

डा. डा. आर.पी.दूबे
मुख्य कार्यकारी निदेशक

अमिताभ त्रिपाठी
वरि. कार्यकारी निदेशक

वरि.संपादक

पी.पी.भारद्वाज
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.)

संपादक

डी.के.सेठी
प्रबंधक (रा.भा.का.)
गीता शर्मा, उप प्रबंधक (रा.भा.का.)

सहयोग

शारदा रानी, वरि.सहायक

(पत्रिका के अंतर्गत प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने हैं। संपादन मण्डल का इसके लिए सहमत होना अनिवार्य नहीं है।)

केवल आन्तरिक वितरण हेतु

इस अंक में	पृष्ठ सं.

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से	1
संबोधन - निदेशक एवं अध्यक्ष, विराकास	2
सम्पादकीय - प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं संपादक	3
राजभाषा गतिविधियां	4
लेख - कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना - वाप्कोस लिमिटेड	5
लेख - अरे हरिद्वार नहीं जाना क्या?	9
कविता - हरी भरी घरा	16
लेख - बांध सुरक्षा-एक अभिनव प्रयास	17
लेख - प्रेम में ही है किसी लत को मिटाने की शक्ति	22
लेख - गांधी और मोदी का सपना स्वच्छ भारत हो अपना	24
लेख - सुचेता कृपलानी (प्रथम महिला मुख्यमंत्री)	31
लेख - सुबह का खाना सबसे अच्छा	36
लेख - मानस उर्मि "उर्मिला"	38
लेख - एलोवेरा एक संजीवनी	40

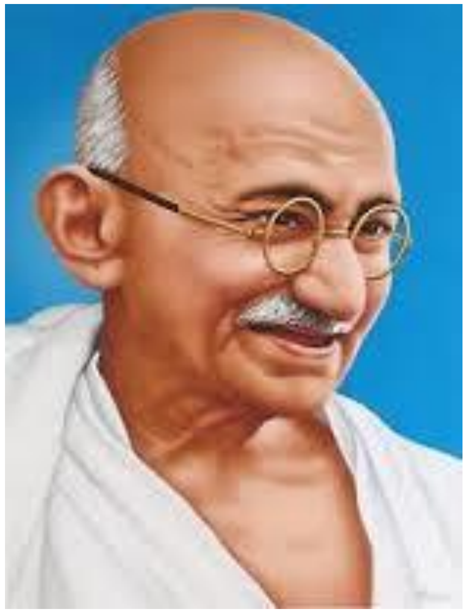

आदर्श का पालन करने के लिए जी-तोड़ प्रयत्न करना चाहिए। लेकिन यदि वैसा करने के बावजूद मन पर अंकुश न रह सके, तो मिथ्याचारी न होकर - जो कुछ बन सके उससे संतुष्ट रहना चाहिए। ऐसा व्यवहार करने वाले लोग बड़ों के आदर के पात्र हैं।

- सम्पूर्ण गांधी वाड्मय (खण्ड 56), पृ0 167

अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक की कलम से

वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका ''वाप्कोस दर्पण'' का 97वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। कार्मिकों में उत्साह व जागरूकता बनाए रखने में यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह हर्ष का विषय है कि हम अपने तकनीकी दायित्वों के सफल निर्वहन के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रयोग के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

किसी भी देश की भाषा उस देश की संस्कृति का आइना होती है। हिंदी हमारी राजभाषा है जिसका प्रयोग सरकारी कामकाज में तो होता ही है, इसके साथ-साथ व्यवसाय जगत की प्रगति में भी इसकी बहुत बड़ी भूमिका है। राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए कार्यालय का अपना अधिक से अधिक कार्य हमें हिंदी में ही करना चाहिए। यह भी खुशी की बात है कि वाप्कोस में अन्य प्रभागों के साथ-साथ तकनीकी प्रभागों में भी हिंदी में कार्य किये जा रहे हैं।

किसी भी व्यक्ति की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्र प्रेम को भी मजूबती प्रदान करता है। सरकारी कामकाज में आसान हिन्दी का प्रयोग करने से हिन्दी भाषा की स्थिति और अधिक सुदृढ़ होगी। इसके लिए हमें कठिन शब्दों की जगह आम बोल-चाल के शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिएं ताकि हम अपने मन से मातृभाषा हिन्दी के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभा सके।

देवश्री मुखर्जी

(देवश्री मुखर्जी)
अध्यक्ष सह प्रबन्ध निदेशक

संबोधन

वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" का 97वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत है। भारत की राजभाषा हिंदी है और राजभाषा के रूप में हिंदी का विकास हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिसके कारण आज भारत में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में हिंदी का प्रयोग तेजी के साथ बढ़ रहा है।

हिंदी बहुत ही सरल व उदार भाषा है। हिंदी को आसान बनाने के लिए कई इलैक्ट्रोनिक यांत्रिक सुविधाएं व सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनकी मदद से हम आसानी से हिंदी में कार्य कर सकते हैं। तकनीकी क्षेत्र में भी रोज नए-नए परिवर्तन हो रहे हैं। नई-नई तकनीकें आ रही है। हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देते हुए हमें इन्हीं नवीन तकनीकों और सकारात्मक दृष्टिकोणों के साथ कार्य करते हुए अपने व्यवसाय के क्षेत्र में भी आगे बढ़ना है।

हमें अपने कार्यालय का कामकाज हिंदी में करने में कठिनाई होती है क्योंकि हम अंग्रेजी में काम करने के आदि हो चुके है और हिंदी में काम करते हुए अनेक शब्दों में उलझकर रह जाते हैं। इसलिए हम कठिन शब्दों को ज्यों-का त्यों लिखकर भी इस समस्या को दूर कर सकते हैं।

मेरा वाप्कोस के सभी कार्मिकों से सप्रेम अनुरोध है कि वह वाप्कोस की त्रैमासिक गृह पत्रिका "वाप्कोस दर्पण" हेतु स्वयं रचित लेख, कविताएं आदि हिंदी अनुभाग को भिजवाते रहें ताकि पत्रिका का मुद्रण आप सभी के सहयोग से सुचारू रूप से समयानुसार होता रहे।

अनुपम मिश्रा

(अनुपम मिश्रा)
निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

वाप्कोस

संपादकीय

''वाप्कोस दर्पण'' गृह पत्रिका का 97वां अंक आप सभी प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है। आज संचार माध्यमों से हिंदी भाषा बड़ी तेजी से सरलीकरण की ओर बढ़ रही है। हमें हिंदी के सरल शब्दों के प्रयोग पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हमें हिंदी को अपने हृदय और मन की भाषा बनाना होगा तभी हिंदी का प्रसार हो सकेगा।

वाप्कोस द्वारा राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में किए गए विभिन्न प्रयासों से वाप्कोस का एक विशेष स्थान है। माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा समय-समय पर निरीक्षणों के दौरान वाप्कोस में हो रही राजभाषा की प्रगति की सराहना करना, वाप्कोस को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में तथा ''वाप्कोस दर्पण'' गृह पत्रिका को विभिन्न मंचों से पुरस्कार प्राप्त होना इसी का परिणाम है।

''वाप्कोस दर्पण'' को अपने पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक व रोचक बनाने के लिए हमने हर संभव प्रयास किया है ताकि इस पत्रिका के माध्यम से अधिक से अधिक लोग हिंदी से जुड़ें, यही हमारा मुख्य उद्देश्य है। आगामी अंकों के लिए आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

(प्रेम प्रकाश भारद्वाज)
प्रमुख (कार्मिक व रा.भा.का.) एवं
संपादक 'वाप्कोस दर्पण'

राजभाषा गतिविधियां

- दिनांक 17.06.2020 को श्री अनुपम मिश्रा, निदेशक (वा.व मा.सं.वि.) एवं अध्यक्ष, विराकास की अध्यक्षता में जूम ऐप पर वाप्कोस की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आनलाइन बैठक आयोजित की गई।

- दिनांक 24.06.2020 को वाप्कोस में जूम ऐप पर हिन्दी कार्यशाला का आनलाइन आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में जल शक्ति मंत्रालय से श्री अशोक कौशिक, अवर सचिव (प्रशा.) ने रोजमर्रा में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के बारे में कार्मिकों को बताया तथा सेवानिवृत्त श्रीमती वीना सत्यवादी, सहायक निदेशक द्वारा राजभाषा नियम/अधिनियमों की जानकारी एवं राजभाषा कार्यान्वयन के रूप में हिंदी की संवैधानिक स्थिति के बारे में बताया। कार्यशाला में 12 कार्मिकों ने भाग लिया।

(डी.के. सेठी)
प्रबंधक (रा.भा.का.)

*****

राजभाषा हिन्दी में काम करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें

1. सरल हिन्दी का प्रयोग करें। लच्छेदार, साहित्यक भाषा की कार्यालय में कोई उपयोगिता नहीं है। ऐसी भाषा का प्रयोग करें, जिसे सभी आसानी से समझ सकें
2. जहां भी आपको लगे कि हिन्दी शब्द को समझने व पढ़ने वालों को कठिनाई हो सकती है, वहां मूल अंग्रेजी शब्दों को ज्यों का त्यों देवनागरी लिपि में अथवा अंग्रेजी में लिख दें।
3. अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का बेहिचक प्रयोग करें।
4. आधुनिक यंत्रों, कल-पुर्जों या तकनीकी विषयों आदि के लिए मूल अंग्रेजी के शब्द ही अपना लिए गए हैं इसलिए उन्हें देवनागरी लिपि में लिखें। जैसे टाइपराइटर, कम्प्यूटर आदि।
5. लम्बे, उलझे हुए वाक्यों के स्थान पर छोटे-छोटे और सरल वाक्यों को लिखने का अभ्यास करें।
6. अंग्रेजी में टिप्पणी, प्रारूप या पत्र लिखकर फिर उसका हिन्दी में अनुवाद करने के स्थान पर मूल रूप से हिन्दी में लिखने का अभ्यास करें। ऐसा करने से ही भाषा सरल, स्वाभाविक और बोधगम्य (कांम्प्रिहैंसिव) होगी।

कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना - वाप्कोस लिमिटेड

सुश्री सी.एच.उदयश्री
हैदराबाद कार्यालय

कालेश्वरम, यह नाम सुनते ही हमें तेलंगाना राज्य, भूपालपल्ली जिले में एकल मूर्तितल पर स्थित दो शिवलिंग, कालेश्वर मुक्तेश्वर रूप में भगवान शिव जी का सुप्रसिद्ध मंदिर याद आता है। यह दूसरे काशी के नाम से प्रसिद्ध पुण्य स्थल है।

इसी महत्वपूर्ण स्थल में ही ''कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना'' जून, 2016 में प्रतिष्ठात्मक रूप से तेलंगाना सरकार के मुख्य मंत्री श्री कल्वकुन्टला चंद्रशेखर जी द्वारा प्रारंभ किया गया था। इस परियोजना ने विश्व में सबसे बड़ी लिफ्ट सिंचाई परियोजना का दर्जा प्राप्त किया है। सुप्रसिद्ध परियोजना होने के कारण हर माध्यम में इसका विवरण उपलब्ध है। हमारे संगठन इस प्रतिष्ठात्मक परियोजना का प्रमुख हिस्सा होने के नाते कुछ विवरण इस प्रकार प्रस्तुत है।

समस्या और सोच विचार :-

हम कई सालों से कृषि और पेय जल के लिए पानी की समस्या का सामना कर रहे हैं। भूजल की अनुपलब्धता से कई किसानों ने आत्महत्या भी की है। संयुक्त आन्ध्र प्रदेश में वै.एस.आर. सरकार ने इस समस्या के मामले में ''डॉ. बी.आर. अम्बेडकर प्राणहित चेवेल्ला सुजला श्रवन्ती'' नाम से परियोजना प्रारंभ की और 'गोदावरी जल विवाद अभिकरण' के अनुसार ''गोदावरी बेसिन से मूल रूप से 160 टी.एम.सी. पानी उपयोग करने का प्रस्ताव था। बाद में तम्मिडिहट्टी के पास बैराज निर्माण का प्रस्ताव किया गया जिससे तेलंगाना राज्य के 7 जिलों को पानी उपलब्ध होगा। लेकिन महाराष्ट्र सरकार की नामंजूरी से यह कार्य रूक गया। तेलंगाना सरकार और सी.डब्ल्यू.सी. के मुख्य अभियंता स्वर्गीय श्री आर.विध्यासागर राव जी द्वारा इस मामले की पुन: समीक्षा और कठोर प्रयत्न से महाराष्ट्र सरकार के साथ बैराज निर्माण के लिए समझौता किया गया। प्राणहिता चेवेल्ला परियोजना का सर्वेक्षण फिर से वाप्कोस ने डिजाइन किया।

कालेश्वरम परियोजना का संक्षिप्त विवरण

कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना का 21 जून, 2019 को तेलंगाना राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री कल्वकुन्टल चंद्रशेखर राव जी द्वारा उदघाटन किया गया था। यह परियोजना 80,000 करोड़ रूपये की है। कालेश्वरम परियोजना को 7 लिंक्स् और 28 पैकेजेस में विभाजित

किया गया है। पहले लिंक में गोदावरी नदी से 195 टी.एम.सी. आबंटित जल प्राप्त करने के लिए मेडिगड्डा बराज का निर्माण किया गया। 240 टीएमसी (195 टीएमसी मेडिगड्डा से, 20 टीएमसी येल्लमपल्ली से, 25 टीएमसी भूजल) पानी उत्पादन के लक्ष्य से यह पूरी परियोजना डिजाइन की गई है। पहले चरण में मेडिगड्डा बराज (16.17 टीएमसी संचयन क्षमता) से लक्ष्मी पम्प हाउस के 11 यंत्रों का परिचालन करके पूरी तरह से उपयोग में लाया गया। अब इस पंप हाउस से 2 टीएमसी/प्रतिदिन लिफ्ट करके फरवरी तक 50 टीएमसी से ज्यादा पानी पंप किया है। इसका लक्ष्य 7 पम्पस् हाउस बढ़ाकर 3 टीएमसी/प्रतिदिन लिफ्ट करना है। यह गोदावरी जल (100 मीटर समुद्र तल से ऊपर) लिफ्ट होकर अन्नारम् बराज (11.9 टीएमसी संचयन क्षमता) में पम्प हो रहा है। सरस्वती पम्प हाऊस की सहायता से यह पानी सुंदिल्ला बराज (5.11 टीएमसी संचयन क्षमता) को पम्प होता है। पार्वती पंप हाऊस की सहयता से श्रीपादा येल्ल्मपल्ली जलाशय (20.175 टीएमसी संचयन क्षमता) में पंप होता है और गायत्री पम्प की सहायता से लगभग 50 टीएमसी मिड-मनेर जलाशय (25.875 टीएमसी संचयन क्षमता) को पंप होता है। मिड-मनेर जलाशय तेलंगाना का हृदय कहा जाता है। चावल की फसलों का उत्पादन और उपज रिकॉर्ड स्तर पर बढ़ा है। मिड-मनेर से 1 टीएमसी पानी अनंतगिरी जलाशय (3.50 टीएमसी संचयन क्षमता, 397 समुद्र तल से ऊपर) में अन्नपूर्णा सर्ज पूल में संग्रहित किया जाता है। अन्नपूर्णा एशिया में सबसे बड़ा सर्ज पूल है। अनंतगिरी जलाशय से नजदीकी गांवों में 30,000 एकड़ आयकट के लिए लाभदायक हो रही है।

24 अप्रैल, 2020 को श्री के.तारक रामाराव जी, आई.टी. मंत्री और श्री हरीश राव जी, वित्त मंत्री द्वारा रंगनायका सागर परियोजना (3 टीएमसी संचयन क्षमता, 490 मीटर समुद्र तल से ऊपर) का प्रारंभ किया गया है।

मांग और आपूर्ति के बीच अत्यधिक असंतुलन के कारण श्री कोमरवेल्ली मल्लन्ना सागर परियोजना के निर्माण की आवश्यकता है जिससे लगभग 75% की समग्र आवश्यकता पूरी होगी। यह मातृ जलाशय है और प्रणाली में कमी होने की स्थिति में कैरीओवर स्टोरेज के रूप में काम करता है फिर यह पानी कोन्डापोचम्मा जलाशय (7 टीएमसी संचयन क्षमता) को जाता है, जो तेलंगाना राज्य का उच्चतम उत्थान है (ऊंचाई 650 मीटर)।

अब तक गोदावरी जल मेडिगड्डा से रंगनायका सागर परियोजना तक लगभग 170 किलोमीटर की यात्रा की है। कालेश्वरम परियोजना का मुख्य उद्देश्य 18,25,700 एकड़ आयकट में सिंचाई करना है, एस.आर.एस.पी. सिंगूर और निजाम सागर परियोजनाओं के माध्यम से 18,82,970 एकड़ मौजूदा आयकट को स्थिर करना है।

कालेश्वरम सिंचाई परियोजना द्वारा लाभ -:

- कृषि के लिए पर्याप्त पानी नहरों से मिल सकता है।
- किसानों के लिए बोर होल की खुदाई करवाना कम होगा।
- किसानों की आत्महत्या दर कम हो जाएगी।
- किसानों को फसलों से अधिक लाभ होगा।
- यह परियोजना उद्योगों और हाइड्रो पावर उत्पादन के लिए उपयोगी होगी ।
- इस परियोजना के पानी को मिशन भागीरथ परियोजना से जोड़ने से हर घर में पेय जल की आपूर्ति होगी।
- मत्स्य पालन में वृद्धि होगी।
- कुछ स्थान पर्यटन स्थल के रूप में बदल सकते हैं।
- इस प्रकार सरकार के राजस्व में वृद्धि होगी।
- इस परियोजना से भविष्य में पूरी तरह से लाभ होगा।

वाप्कोस की मुख्य भूमिका :-

परियोजना को क्रियाशील बनाने, सही लाभ प्राप्त करने और तेलंगाना राज्य को गोदावरी बेसिन हिस्से का प्रभावी ढ़ंग से उपयोग करने के लिए, गोदावरी नदी के पार बराज के लिए वाप्कोस द्वारा एक वैकल्पिक स्थल की जांच की गई थी जिसके लिए एरियल सर्वेक्षण और नवीनतम तकनीक यानी लिडार (LLDAR) सर्वेक्षण का उपयोग किया गया था। बराज के लिए सही स्थान और पानी के जलग्रहण क्षेत्र की उपलब्धता प्राप्त करने के लिए लिडार सर्वेक्षण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पूर्ण सर्वेक्षण की स्टीक जानकारी प्राप्त करने के लिए नदी और वनों में सैंकड़ों मील पैदल चलना पड़ा था।

वाप्कोस के सभी तकनीकी विवरण जैसे भौगोलिक सर्वेक्षण, मिट्टी का सर्वेक्षण और जांच, भूजल अध्ययन, भूवैज्ञानिक जांच, लागत अनुमान, जलाशयों की डिजाइनिंग का अध्ययन, सिंचाई योजना और मानचित्र अध्ययन आदि सभी अध्ययन कम समय में करके डीपीआर (विस्तृत परियोजना रिपोर्ट) तैयार करके सरकार को प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट के अनुसार बराज के लिए मुख्य उपयुक्त स्थान कालेश्वरम मेडिगड्डा है। सूचित स्थान से गोदावरी जल 284.3 टीएमसी

(जारी परियोजनाओं से पेन गंगा, वार्धा और प्राणहिता परियोजनाओं द्वारा प्रस्तावित उपयोग) निवल उपलब्धता है, जिसमें से 195 टीएमसी जल प्राप्त कर सकते हैं।

इस तरह तेलंगाना राज्य के हर कोने तक गोदावरी जल की आपूर्ति होने में वाप्कोस ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कालेश्वरम लिफ्ट सिंचाई परियोजना जैसे प्रतिष्ठित्मक परियोजना से जुड़ना और उसमें हमारा एक मुख्य हिस्सा बनना हमारे लिए गौरव की बात है जो मातृभूमि के कल्याण हित में है।

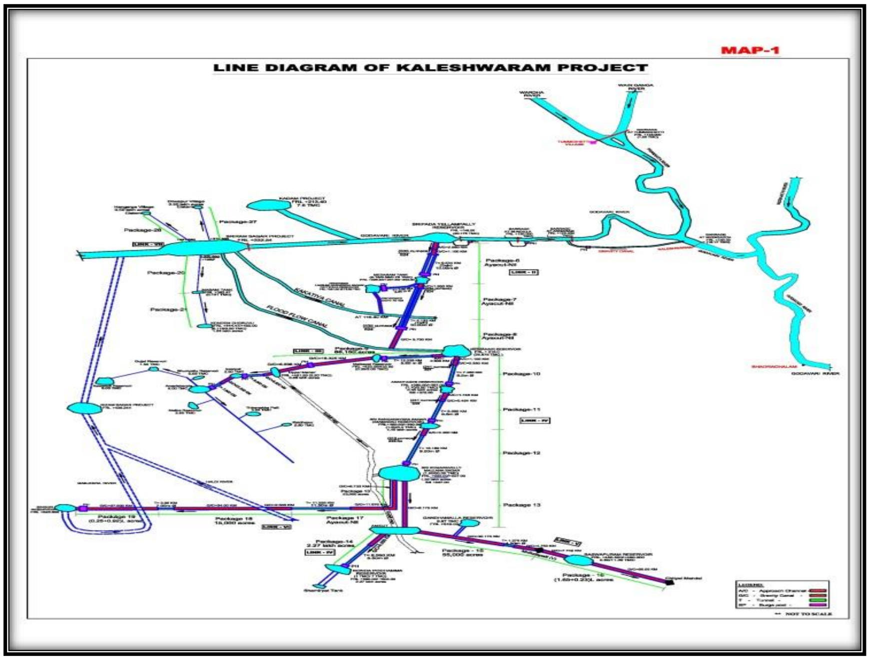

बराज जांच करते हुए वाप्कोस तकनीकी टीम

******

अरे ! हरिद्वार नहीं जाना क्या ?

साभार : भाषा स्पंदन

भोर के समय सूर्यदेवता ने अपना प्रसार क्षेत्र विस्तृत करना आरंभ कर दिया था। सत्य कुमार बालकनी में आंखें मूंदे बैठे थे, तभी किचन से उनकी धर्मपत्नी सुधा चाय लेकर आई। "लो, ऐसे कैसे बैठे हो, अभी तो उठे हो, फिर आंख लग गई क्या ? क्या बात है, तबीयत ठीक नहीं लग रही है क्या ? सुधा ने मेज पर चाय की ट्रे रखते हुए पूछा। सत्य कुमार ने धीमे से आंखें खोलकर देखा और पुन: आंखें मूंद लीं।

सुधा कप में चाय उड़ेलते हुए दबे स्वर में बोलने लगी, "मुझे मालूम है, दीपू का वापस जाना आपको खल रहा है। मुझे भी अच्छा नहीं लग रहा है, लेकिन क्या करें। हर बार ऐसा ही होता है - बच्चे आते हैं, कुछ दिनों की रौनक होती है और वे चले जाते हैं।"

मेरठ यूनिवर्सिटी के रिटायर्ड प्रवक्ता और लेखक सत्य कुमार की विद्वत्ता उनके चेहरे से साफ झलकती थी। उनकी पुस्तकों से आने वाली रॉयल्टी रिटायरमेंट के बाद पनपने वाले आर्थिक अभावों को दूर फेंकने में सक्षम थी। उनके दो बेटों में छोटा सुदीप अपनी सहपाठिनी के साथ प्रेम-विवाह कर मुम्बई में सेटल हो गया था। विवाह के बाद वो उनसे ज्यादा मतलब नहीं रखता था। बड़ा बेटा दीपक कम्प्यूटर इंजीनियर था। उसने अपने माता-पिता की पसंद से अरेन्जड मैरिज की थी। उसकी पत्नी मधु सुंदर, सुशील और हर काम में निपुण, अपने सास-ससुर की लाडली बहू थी। दीपक और मधु कुछ वर्षों से लंदन में थे और वहीं सेटल होने की सोच रहे थे।

दीपक का लंदन में रूक जाना सत्य कुमार को अच्छा नहीं लगा, मगर सुधा ने उन्हें समझा दिया था कि अपनी ममता को बच्चों की तरक्की के आड़े नहीं आना चाहिए और वैसे भी वो लंदन रहेगा तो भी क्या, आपकी रिटायरमैंट के बाद हम ही उसके पास चले जाएंगे। दीपक और मधु उनके पास साल में एक बार 10-15 दिनों के लिए अवश्य आते और उनसे लंदन चलने का अनुरोध करते। मधु जितने दिन वहां रहती, अपने सास-ससुर की खूब सेवा करती।

आज सत्य कुमार को रिटायर हुए पूरे दो वर्ष हो चुके थे, मगर इन दो वर्षों में दीपक ने उन्हें लंदन आने के लिए भूले से भी नहीं कहा। सुधा उनसे बार-बार जिद किया करती थी, 'चलो हम ही लंदन चलें', लेकिन वो बड़े ही स्वाभिमानी व्यक्ति थे, बिना बुलावे के कहीं जाना स्वयं का

अपमान समझते थे। उनकी बंद आंखों के पीछे कल रात के उस दृश्य की बारम्बार पुनरावृत्ति हो रही थी, जो उन्होंने दुर्भाग्यवश अनजाने में देखा था। दीपक और मधु अपने कमरे में वापसी के लिए पैकिंग कर रहे थे, दोनों में कुछ बहस छिडी हुई थी, 'देखो- तुम भूले से भी मम्मी और पापा को लंदन आने के लिए मत कहना, वो दोनों तो कब से तुम्हारी पहल की ताक में बैठे हैं, मुझसे उनके नखरे नहीं उठाए जाएंगे, मुझे ही पता है, मैं यहां कैसे 15-20 दिन निकालती हूं। सारा दिन नौकरानियों की तरह पिसते रहो, फिर भी इनके नखरे ढीले नहीं होते। चाहो तो हर महीने कुछ पैसे भेज दिया करो, हमें कोई कमी नहीं आएगी'' मधु बार-बार गर्दन झटकते हुए बड़बडाए जा रही थी।

'कैसी बातें कर रही हो? मुझे तुम्हारी उतनी ही चिन्ता है जितनी की तुम्हें। तुम फिक्र मत करो, मैं उनसे कभी नहीं कहूंगा। मुझे पता है, पापा बिना कहे लंदन कभी नहीं आएंगे।' दीपक मधु को समझा रहा था कि 'मुझे तो खुद उनके साथ एडजस्ट करने में दिक्कत होती है। वे अभी भी मुझे बच्चे ही समझते हैं। अपने हिसाब से ही चलाना चाहते हैं। समझते ही नहीं कि उनकी लाइफ अलग है, हमारी लाइफ अलग। उनकी इसी आदत की वजह से सुदीप ने भी उनसे कन्नी काट ली' दीपक धाराप्रवाह बोलता चला जा रहा था। दोनों इस बात से बेखबर थे कि दरवाजे के पास खड़े सत्य बुत बने उनके इस वार्तालाप को सुन रहे थे।

सत्य कुमार सन्न थे उनका मस्तिष्क कुछ सोचने-समझने के दायरे से बाहर जा चुका था, अत: वो उन दोनों के सामने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं कर पाए। उनको सी-ऑफ करने तक का समय उन्होंने कैसे कांटो पर चलकर गुजारा, ये बस उनका दिल ही जानता था। दीपक और मधु जिनकी वो मिसाल दिया करते थे, उन्हें इतना बड़ा धोखा दे रहे थे, जाते हुए दोनों ने कितने प्यार और आदर के साथ उनके पैर छुए थे। ये प्यार ये अपनापन सब दिखावा छि: उनका मन पुन: घृणा और क्षोभ से भर उठा। वो यह भी तय नहीं कर पा रहे थे कि सुधा को इस बारे में बताएं या नहीं, ये सोचकर कि क्या वो यह सब सह पाएगी। सत्य बार-बार बीती रात के घटनाक्रम को याद कर दुख के महासागर में गोते लगाने लगे।

समय अपनी रफ्तार से गुजरता जा रहा था, मगर सत्य कुमार का जीवन जैसे उसी मोड पर थम गया था। अपनी आंतरिक वेदना को प्रत्यक्ष रूप से बाहर प्रकट नहीं कर पाने के कारण वो भीतर ही भीतर घुटते जा रहे थे। उस घटना के बाद उनके स्वभाव में भी काफी नकारात्मक परिवर्तन आ गया। दुख को भीतर-ही-भीतर घोट लेने के कारण वे चिड़चिड़े होते जा रहे थे। बच्चों से मिली उपेक्षा से स्वयं को अवांछित महसूस करने लगे थे। धीरे-धीरे सुधा भी उनके दर्द को महसूस करने लगी। दोनों मन-ही-मन घुटते, मगर एक-दूसरे से कुछ नहीं कहते। लेकिन अभी भी उनके दिल के

किसी कोने में उम्मीद की एक धुंधली किरण बाकी थी कि शायद कभी किसी दिन बच्चों को उनकी जरूरत महसूस हो और वो उन्हें जबरन अपने साथ ले जाएं, ये उम्मीद ही उनके अंत:करण की वेदना को और बढ़ा रही थी।

एक दिन सत्य कुमार किसी काम से हरिद्वार जा रहे थे। उन्हें चले हुए 3-4 घंटे हो चुके थे, तभी कार से अचानक खर्र-खर्र की आवाजें आने लगीं। इससे पहले कि वो कुछ समझ पाते, कार थोडी़ दूर जाकर रूक गई और दोबारा स्टार्ट नहीं हुई। सूरज सिर पर चढ कर मुंह चिढ़ा रहा था। पसीने से लथपथ सत्य लाचार खड़े अपनी कार पर झुंझला रहे थे। ''थोडा़ पानी पी लीजिए।'' सुधा पानी देते हुए बोली, ''काश कहीं छाया मिल जाए।'' सुधा साड़ी के पल्लू से मुंह पोंछते हुए इधर-उधर नजरें दौड़ाने लगी।

''मेरा तो दिमाग ही काम नहीं कर रहा है, ये सब हमारे ही साथ क्यूं होता है ? क्या भगवान हमें बिना परेशान किए हमारा कोई काम पूरा नहीं कर सकता खुद को असहाय पाकर सत्य कुमार ने भगवान को ही कोसना शरू कर दिया।''

''देखो वहां दूर एक पेड़ है, वहां दो-तीन छप्पर भी लगे हैं, वहीं चलते हैं। शायद कुछ मदद मिल जाए'' सुधा ने दूर एक बड़े बरगद के पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा। दोनों बोझिल कदमों से उस दिशा की ओर बढ़ने लगे।

वहां एक छप्पर तले चाय की एक छोटी सी दुकान थी, जिसमें दो-तीन टूटी-फूटी बेंचे पड़ी थीं। उन पर दो ग्रामीण चाय पी रहे थे। वहीं पास में एक बुढ़िया कुछ गुनगुनाती हुई उबले आलू छील रही थी। दुकान में एक तरफ टूटे-फूटे तसले में पानी भरा था, उसके पास ही अनाज के दाने बिखरे पड़े थे। कुछ चिड़िया फुदककर तसले में भरा पानी पी रही थीं और पेट पूजा कर रही थीं। साथ लगे पेड़ से बार-बार गिलहरियां आतीं दाना उठाती और सर्र से पेड़ पर वापस चढ़ जातीं। पेड़ की शाखाओं के हिलने से ठंडी हवा का झोंका आता जो भरी दोपहरी में बड़ी राहत दे रहा था। शाखाओं के हिलने से पक्षियों की चहचहाट से, गिलहरियों की भाग-दौड़ से उपजे मिश्रित संगीत की गूंज अत्यंत कर्ण प्रिय लग रही थी। सुधा आंखे मूंदे इस संगीत का आनंद लेने लगी।

''क्या चाहिए बाबूजी चाय पीवो ?''

बुढ़िया की आवाज़ से सुधा की तंद्रा टूटी। वो सत्य कुमार की ओर देखते हुए बोली,

"आप चाय के साथ कुछ लोगे क्या ?"

“नहीं। सत्य कुमार ने क्रोध भरा टका-सा जवाब दिया।”

“बाबूजी, आपकी सकल बतावे है कि आप भूखे भी हो और परेशान भी, खाली पेट तो रत्तीभर परेशानी भी पहाड़ जैसी दिखे है। पेट में कुछ डाल लो। शरीर भी चलेगा और दिमाग भी, हा-हा-हा बुढ़िया इतना कहकर खुलकर हंस पड़ी।”

बुढ़िया की हंसी देखकर सत्य कुमार तमतमा गए। लो पड़ गई आग में आहुति, सुधा मन में सोचकर सहम गई। वो मुंह से कुछ नहीं बोले, लेकिन बुढ़िया की तरफ़ घूरकर देखने लगे।

बुढ़िया चाय बनाते-बनाते बतियाने लगी,

“बीबीजी, इस सुनसान जगह में कैसे थमे, क्या हुआ?”

“दरअसल हम यहां से गुज़र रहे थे कि हमारी गाड़ी ख़राब हो गई। पता नहीं यहाँ आसपास कोई मैकेनिक भी मिलेगा या नहीं। सुधा ने लाचारी प्रकट करते हुए पूछा।”

“मैं किसी के हाथों मैकेनिक बुलवा लूंगी। आप परेशान न होवो।” बुढ़िया उन्हें चाय और भजिया पकड़ाते हुए बोली।

“अरे ओ रामसरन, इधर आइयो” बुढ़िया दूर खेत में काम कर रहे व्यक्ति की ओर चिल्लाई। “भाई, इन भले मानस की गाड़ी ख़राब हो गयी है, जरा टीटू मैकेनिक को तो बुला ला गाड़ी बना देवेगा। इस वीराने में कहाँ जावेंगे बेचारे।” बुढ़िया के स्वर में ऐसा विनयपूर्ण निवेदन था, जैसे उसका अपना काम ही फंसा हो।

“बाबूजी चिंता मत करो, टीटू ऐसा बच्चा है जो किसी भी बिगड़ी गाड़ी को चलता कर देवे है।” इतना कह बुढ़िया चिड़ियों के पास बैठ ज्वार-बाजरे के दाने बिखेरने लगी। “अरे मिट्ठू, आज मिट्ठी कहाँ है?” वो एक चिड़िया से बतियाने लगी।”

सत्य को उसका व्यवहार कुछ सोचने पर मजबूर कर रहा था। ऐसी बुढ़िया जिसकी शारीरिक और भौतिक अवस्था अत्यंत जर्जर है, उसका व्यवहार, उसकी बोलचाल इतनी सहज, इतनी उन्मुक्त है जैसे कोई दुख का बादल उसके ऊपर से न गुजरा हो, कितनी शांति है उसके चेहरे पर।

“माई, तुम्हारा घर कहाँ है? यहाँ तो आसपास कोई बस्ती नज़र नहीं आती, क्या कहीं दूर रहती हो?” सत्य कुमार ने विनम्रतापूर्वक प्रश्न किया।

“बाबूजी, मेरा क्या ठौर-ठिकाना, कोई गृहस्ती तो है ना मेरी, जो कहीं घर बनाऊं?” सो यहीं इस छप्पर तले मौज से रहूँ हूँ। भगवान की बड़ी किरपा है।” सत्य कुमार का ध्यान बुढ़िया के मुंह से

निकले "मौज", शब्द पर अटका। भला कहीं इस शमशान जैसे वीराने में अकेले रहकर भी मौज की जा सकती है। वो बुढ़िया द्वारा कहे गए कथन का विश्लेषण करने लगे, उन्हें इस बुढ़िया का फक्कड़ मस्ताना व्यक्तित्व अत्यंत रोचक लग रहा था।

"यहाँ निर्जन स्थान पर अकेले कैसे रह लेती हो माई, कोई परेशानी नहीं होती क्या ?" सत्य कुमार ने उत्सुकता से पूछा।

"परेसानी" बुढ़िया क्षणभर के लिए ठहरी, "परेसानी काहे की बाबूजी, मजे से रहूँ हूँ, खाऊं हूँ, पियूं हूँ और तान के सोऊँ हूँ, देखो बाबूजी मानस जन ऐसा प्रानी है, जो जब तक जिए है, परेसानी-परेसानी चिल्लाता फिरे है, भगवान उसे कितना ही दे देवे, उसका पेट नहीं भरे है। मैं पूछूं हूँ, आखिर खुस रहने को चाहवे ही क्या, जरा इन चिड़ियों को देखो, इन बिचारियों के पास क्या है। पर ये कैसे खुस होकर गीत गावे हैं।"

सत्य कुमार को बुढ़िया की सब बातें ऊपरी कहावतें लग रहीं थीं।

''पर भाई अकेलापन तो लगता होगा ना? सत्य कुमार की आंखों में दर्द झलक उठा।''

''अकेलापन काहे का बाबू जी दिन में तो आप जैसे भले मानस आवे हैं। चाय पीने वास्ते गांव वाले भी आते-जाते रहवे हैं और ये मेरी चिड़कल बिटिया तो सारा दिन यहीं डेरा डाले रखे हैं।'' बुढ़िया पास फुदक रही चिड़ियों पर स्नेहमयी दृष्टि डालते हुए बोली।

क्या इतना काफी है अकेलेपन के एहसास पर विजय प्राप्त करने के लिए सत्य कुमार के मन में विचारों का मंथन चल रहा था। उनके पास तो सब कुछ है - घर बार, दोस्तों का अच्छा दायरा, उनके सुख-दुख की साथी सुधा, फिर क्यों उन्हें मात्र बच्चों की उपेक्षा से अकेलेपन का एहसास सांप की तरह डसता है?

''अकेलापन, परेसानी ये सब फालतू की बातें हैं बाबूजी। जिस मानस को रोने की आदत पड़ जावे है ना, वो कोई न कोई बहाना ढूंढ़ ही लेता है रोने का।'' बुढिया की बातें सुन सत्य कुमार अवाक रह गए। उन्हें लगा जैसे बुढ़िया ने सीधे- सीधे उन्हीं पर पत्थर दे मारा हो।

क्या सचमुच हर वक्त रोना, किस्मत को और दूसरों को दोष देना उनकी आदत बन गयी है? क्यों उनका मन इतना व्याकुल रहता है? सत्य कुमार के मन में उद्वेगों का एक और भंवर चल पड़ा।

''माई तुम्हारा घर-बार कहां है, कोई तो होगा सगा संबंधी?''* सत्य कुमार ने अपनी पूछताछ का क्रम जारी रखा।

बुढ़िया गर्व से गर्दन अकड़ाते हुए बोली,

''है क्यों नहीं बाबूजी, पूरा हरा भरा कुनबा है मेरा। भगवान सबको बरकत दे। बाबूजी, मेरे आदमी को तो मरे ज़माणा बीत गया। तीन बेटे और दो बेटियाँ है मेरी। नाती-पोतोवाली हूँ, सब सहर में बसे हैं और अपनी-अपनी गृहस्ती में मौज करे हैं। बुढ़िया कुछ देर के लिए रुक कर फिर बोली, "मेरा एक बच्चा फ़ौज में था, पिछले साल कसमीर में देश के नाम सहीद हो गया। भगवान उसकी आत्मा को सांति देवे।"

बुढ़िया की बात सुन दोनों हतप्रभ रह गए और एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे इतनी बड़ी बात कितनी सहजता से कह गयी थी वो उसके चाय बनाने के क्रम में कहीं भी व्यवधान नहीं पड़ा था। वो पूरी तरह से सामान्य थी। न चेहरे पर शिकन। न आँखों में नमी, क्या इसे बच्चों का मोह नहीं होता? सत्य कुमार मन-ही-मन सोचने लगे,

"तुम अपने बेटों के पास क्यों नहीं रहती हो?" उन्होंने एक बड़े प्रश्न चिन्ह के साथ बुढ़िया से पूछा।

"नहीं बाबूजी अब कौन उस मोह-माया के जंजाल में उलझे सब अपने-अपने ढंग से अपनी गृहस्ती चलावे हैं। अपनी-अपनी सीमाओं में बंधे हैं मैं साथ रहने लगूंगी, तो अब बुढ़ापे में मुझसे तो न बदला जावेगा, सो उन्हें ही अपने हिसाब से चलाने की कोसिस करूंगी। खुद भी परेसान रहूंगी और उन्हें भी परेसान करूंगी। मैं तो यहीं अपनी चिद्कल बिटियों के साथ भली।" बुढ़िया दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए बोली। ''अरे मेरी बिट्टू आ गई, आज तेरे बच्चे संग नहीं आए? कहीं तेरा साथ छोड़ फुर्र तो नहीं हो गये?" बुढ़िया एक चिड़िया के ओर लपकी।

"बाबूजी, मेरी बिट्टू को इसके बच्चे इससे उड़ना सीख फुर्र हो गए, तो क्या ये परेसान हो रही है? रोज़ की तरह अपना दाना पानी लेने आई है और चहके भी है। ये तो प्रकृति का नियम है बाबूजी, ऐसा ही होवे है। इस बारे में सोच के क्या परेसान होना।"

बुढ़िया ने सीधे सत्य और सुधा की दुखती रग पर हाथ रख दिया। यही तो था उनके महादुख का मूल, उनके बच्चे उड़ना सीख फुर्र हो गए थे।

"बाबूजी संसार में हर जन अकेला आवे है और यहां से अकेला ही जावे है। भगवान हमारे जरिये से दुनिया में अपना अंस (अंश) भेजे हैं, मगर हम हैं कि उसे अपनी जायदाद समझ दाब लेने की कोसिस करे हैं। सो सारी ऊमर उसके पीछे रोते-रोते काट देवे हैं। जो जहां है, जैसे जीवे है जीने दो और खुद भी मस्ती से जीवो। ज़ोर-जबरदस्ती का बंधन तो बाबूजी कैसा भी हो, दुखे ही है।

प्यार से कोई साथ रहे तो ठीक, नहीं तो तू अपने रस्ते मैं अपने रस्ते" बुढ़िया एक दार्शनिक की तरह बेफिक्री-से बोली चली जा रही थी और वो दोनों मूक दर्शक बने सब कुछ चुपचाप सुन रहे थे। उसकी बातें सत्य कुमार के अंतर्मन पर गहरी चोट कर रही थीं।

ये अनपढ़ मरियल-सी बुढ़िया ऐसी बड़ी-बड़ी बातें कर रही है। इस ढांचा शरीर में इतना प्रबल मस्तिष्क। क्या सचमुच इस बुढ़िया को मानसिक कष्ट नहीं है? बुढ़िया के कड़वे, लेकिन सच्चे वचन सत्य कुमार के मन पर भीतर तक असर डाल रहे थे।

"लो रामसरन आ गया।" बुढ़िया की उत्साहपूर्ण आवाज़ से दोनों की ध्यानमग्नता टूटी।

आज सत्य कुमार को बुढ़िया के व्यक्तित्व के सामने स्वयं का व्यक्तित्व बौना प्रतीत हो रहा था। आज महाज्ञानी सत्य कुमार को एक अनपढ़, अदना-सी बुढ़िया से तत्व ज्ञान मिला था। आज बुढ़िया का व्यवहार ही उन्हें काफ़ी सीख दे गया था। सत्य कुमार महसूस कर रहे थे जैसे उनके चारों ओर लिपटे अनगिनत जाले एक-एक करके हटते जा रहे हों। अब वो अपने अंतर्मन की रोशनी में सब कुछ स्पष्ट देख पा रहे थे। जो पास नहीं हैं, उसके पीछे रोते-कल्पते और जो हैं, उसका आनंद न लेने की भूल उन्हें समझ आ गई थी।

बाबूजी कार ठीक हो गई है।" मैकेनिक की आवाज़ से सत्य कुमार विचारों के आकाश से पुन: धरती पर आए।

"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।" सत्य कुमार ने मुस्कराहट के साथ मैकेनिक का धन्यवाद किया। उनके चेहरे से दु:ख और परेशानी के भाव गायब हो चुके थे। दोनों कार में बैठ गए। सत्य ने वहीं से बुढ़िया पर आभार भरी दृष्टि डाली और कार वापस घुमा ली।

"अरे, यह क्या, हरिद्वार नहीं जाना क्या?" सुधा ने घबराकर पूछा - "नहीं।", सत्य कुमार ने बड़े जोश के साथ उत्तर दिया। "हम हरिद्वार नहीं जा रहे हैं।" थोड़ा रुककर पुन: बोले, "हम मसूरी जा रहे हैं घूमने-फिरने। काम तो चलते ही रहते हैं। कुछ समय अपने लिए भी निकाला जाए।"

सत्य कुमार कुछ गुनगुनाते हुए ड्राइव कर रहे थे और सुधा उन्हें विस्मित नेत्रों से घूरे जा रही थी।

अब आप माने या न मानें। यही जीवन का हिस्सा है इसलिए किसी से उम्मीद न करें। अपनी दुनिया में जियें और मस्त रहें। इसे बहुत ही धीरे से समझ कर पढ़ें, आपके जीवन की दिशा और सोच ही बदल जाएगी।

******

"हरी भरी धरा"

प्लास्टिक मुक्त भारत हेतु समर्पित

डॉ. उदय रोमन
परियोजना प्रबंधक,
क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

हरी भरी बसुंधरा पे किसने आ के विष भरा
उस धृष्ट दैत्य को तुम ललकार दो
अवरूद्ध नीर का बहाव, नभ से कैसा रक्त स्त्राव
दुंदुभि से युद्ध की पुकार दो
''हरी भरी धरा''

हवा में क्यूं नमी नहीं, क्यूं सांस है थमी थमी,
ये प्राण वायु हो रही निश्वास क्यूं
क्यूं उड़ते पंख गिर गये, गौचर जमीं पे क्यूं पड़े
जलाधिं तल पे जीव यूं निठाल क्यूं।
''हरी भरी धरा''

है आज हमारे वश में कल को, क्यूं रहें विवश में,
इस बात को समस्त विश्व जान ले
जो आज निद्रा ना जगे, जो साथ में नहीं लगे
विनाश पीढ़ियों का होगा मान लें।
''हरी भरी धरा''

वो सहस्त्र है तो क्या, अस्त व्यस्त है तो क्या
गदा उठा के जांघ पर प्रहार दो
छिन्न-भिन्न हर दिशा में, युक्ति शक्ति चेतना से
दुष्ट दानवों के पग उखाड़ दो।
''हरी भरी धरा''

तीर क्यूं चलायें हम, कृपाण क्यूं उठाये हम
जब अंगुलियों में शक्ति विद्यमान है
करें प्रयास साथ में, संकल्प लिये हाथ में
चलो धरा को फिर से वो सम्मान दें
''हरी भरी धरा''

हरी भरी वसुंधरा पे किसने आ के विष भरा
उस धृष्ट दैत्य को तुम ललकार दो
अवरूद्ध नीर का बहाव, नभ से कैसा रक्त स्त्राव
दुंदुभि से युद्ध की पुकार दो
''हरी भरी धरा''

****

बांध सुरक्षा - एक अभिनव प्रयास !

सुधांशु चामोली, अभियंता तथा
रूमा सिद्दीकी, कैड ऑपरेटर
वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल

भारत जैसे कृषि प्रधान राष्ट्र के लिए जो अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर है उसके लिए बांध निर्माण एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। बांध निर्माण से न केवल अतिवर्षा पर पानी का संरक्षण अपितु, जल आपूर्ति सिंचाई एवं जल विद्युत ऊर्जा का उत्पादन एक मुख्य कार्य है, अतः यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि **"बांध आधुनिक भारत के तीर्थ है"**।

किन्तु यह सब इतना सहज् नहीं है, क्योंकि भारत की भौगोलिक दृष्टि से बांध निर्माण एक कठिन कार्य रहा है। भारत में बड़े बांध उन बांधों को कहते है जो कि 15 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले होते है। इसके अतिरिक्त इस श्रेणी में 10 मीटर और 15 मीटर के बीच की ऊंचाई बांध ही आते हैं। चूंकि बांध के जलाशय में बड़ी मात्रा में पानी एकत्रित रहता है, इसलिए बांध के टूटने पर जानमाल का भारी नुकसान हो सकता है। यही वजह है कि बांध की सुरक्षा की निगरानी करना अनिवार्य होता है जिसके फलस्वरूप बांध सुरक्षा बिल 2019 लोकसभा में प्रस्तुत किया गया था।

सम्पना बांध

बांधों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर में बांध सुरक्षा कमेटी एवं अथॉरिटी गठित की गई है, जिनका कार्य संबंधित नीतियों को लागू करना, तकनीकी सहायता

प्रदान करना एवं केन्द्र और राज्यों के बीच किसी भी विवाद को सुलझाना शामिल है। इसी क्रम में बांध की सुरक्षा को लेकर, प्राकृतिक अथवा कृत्रिम आपदाओं से होने वाले नुकसान से निपटने के लिए केन्द्रीय जल आयोग ने बांधों के लिए **आपातकालीन कार्य योजना (EAP)** बनाने का प्रावधान किया है।

केन्द्रीय जल आयोग/बांध पुनर्वास और सुधार परियोजना (DRIP) द्वारा सभी राज्यों को अपने बांधों के लिए आपातकालीन कार्य योजना बनाना अनिवार्य किया गया है। इन्ही निर्देशों के परिपालन में मध्यप्रदेश राज्य ने भी अपने सभी बांधों के लिए आपातकालीन कार्य योजना बनाना अनिवार्य कर दिया है। मुझे इस लेख के द्वारा यह सूचित करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि मध्यप्रदेश सरकार ने इस महत्वपूर्ण योजना को साकार करने के लिए **वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल** को अधिकृत किया है। इस कार्य के अन्तर्गत वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल को मध्यप्रदेश राज्य के 11 अति महत्वपूर्ण बांधों के लिए आपातकालीन कार्य योजना तैयार करनी है। इस दायित्व को निभाने के लिए वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल कार्यरत् है एवं सम्पना बांध, जो मध्यप्रदेश के बैतूल जिले में स्थित है, आपातकालीन कार्य योजना, प्रारूप का कार्य पूर्ण हो गया है। शेष बांधों :-

- मकरोदा बांध (गुना)
- जिरभर बांध (खरगोन)
- कोलार बांध (सिहोर)
- तवा बांध (होशांगाबाद)
- चंद्रकेशवर बांध (देवास)
- संजय सरवर बांध (सिवानी)
- सराथी बांध (बालाघाट)
- खरादी बांध (बालाघाट)
- कनकरखेड़ा बांध (सिहोर)
- ढोलावद बांध (रतलाम)

आपातकालीन कार्य योजना का कार्य प्रगति पर है। इस आपातकालीन कार्य योजना में बांध के जल ग्रहण क्षेत्र (Catchment) में, अतिवर्षा से उत्पन्न होने वाली, आपातकालीन परिस्थितियों में, बांध के निचले हिस्से (डाउन स्ट्रीम) के गांवों/शहरों को सुरक्षित रखने के लिए, कार्य योजना का प्रावधान किया गया है। बांध के जल स्तर को सम्पूर्ण वर्षा अवधि में, चार स्तर पर संग्रहित किया जाता है। इन चार स्तरों को रूल लेवल कहते है। ये तारीखें निम्नानुसार होती है - **एक जुलाई, एक अगस्त, एक सितंबर एवं एक अक्टूबर।**

बांध को सुरक्षित रखने के लिए, दो स्तरों पर कार्य किया जाता है -

एक सामान्य दृष्टिकोण - जलाशय परिचालन की पद्धति में, सुधार एक उपचार में, जलग्रहण क्षेत्र ट्रीटमेंट में, जैसे जलाशय की परिधि में, पेड़ पौधों को रोपण करना, जिससे बांध में गाद (Silt) का आना कम होता है, एवं वर्षा का पानी, शीघ्र ही जलाशय में संग्रहित नही होता है।

दूसरा विशेष दृष्टिकोण - जिसमें, बांध के निचले हिस्से में, नदी के गहरीकरण एवं बांध सुरक्षा बंध बनाना शामिल है।

Classification limits for vulnerability thresholds of combined hazard curves.

Hazard Vulnerability Classification	Description	Classification Limit (Depth * Velocity)	Limiting Water Depth (m)	Limiting Velocity (m/s)
H1	Generally safe for vehicles, people and buildings.	D*V ≤ 0.3	0.3	2.0
H2	Unsafe for small vehicles.	D*V ≤ 0.6	0.5	2.0
H3	Unsafe for vehicles, children and the elderly.	D*V ≤ 0.6	1.2	2.0
H4	Unsafe for vehicles and people.	D*V ≤1.0	2.0	2.0
H5	Unsafe for vehicles and people. All buildings vulnerable to structural damage. Some less robust buildings subject to failure.	D*V ≤4.0	4.0	4.0
H6	Unsafe for vehicles and people. All building types considered vulnerable to failure.	D*V >4.0	-	-
[a]Combined Hazard – Vulnerability Classification (Smith et al., 2014)				

वाप्कोस लिमिटेड द्वारा इस कार्य योजना के अंतर्गत मुख्यतः तीन प्रकार की परिस्थितियों को आधार स्वरूप लिया गया है -

- ओवरटॉपिंग फेलियर
- लार्ज कंट्रोलमेंट एरिया
- आंतरिक फेलियर

उपर्युक्त सभी परिस्थितियों में पानी की गहराई, पानी की गति एवं बाढ़ आने का समय को HEC-RAS Software के माध्यम से संपूर्ण जलग्रहण क्षेत्र में, नक्शों द्वारा दर्शाया गया है। इस साफ्टवेयर द्वारा रिवर ऐनालिसिस सिस्टम (RAS) तैयार किया जाता है जिसकी सहायता से बाढ़ के प्रसार की संभावना का आकलन कर प्रभावित गांवों अथवा क्षेत्रों को समय पर सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जा सकता है। बांध के निचले हिस्से में स्थित क्षेत्र को निकालने (चिन्हित करने) के लिए जापान ऐअरो स्पेस एक्सपोलेशन ऐजेन्सी, डिजीटल सरफेस, मॉडल (JAXA) का उपयोग बांध की आपातकालीन कार्य योजना बनाने में किया गया है।

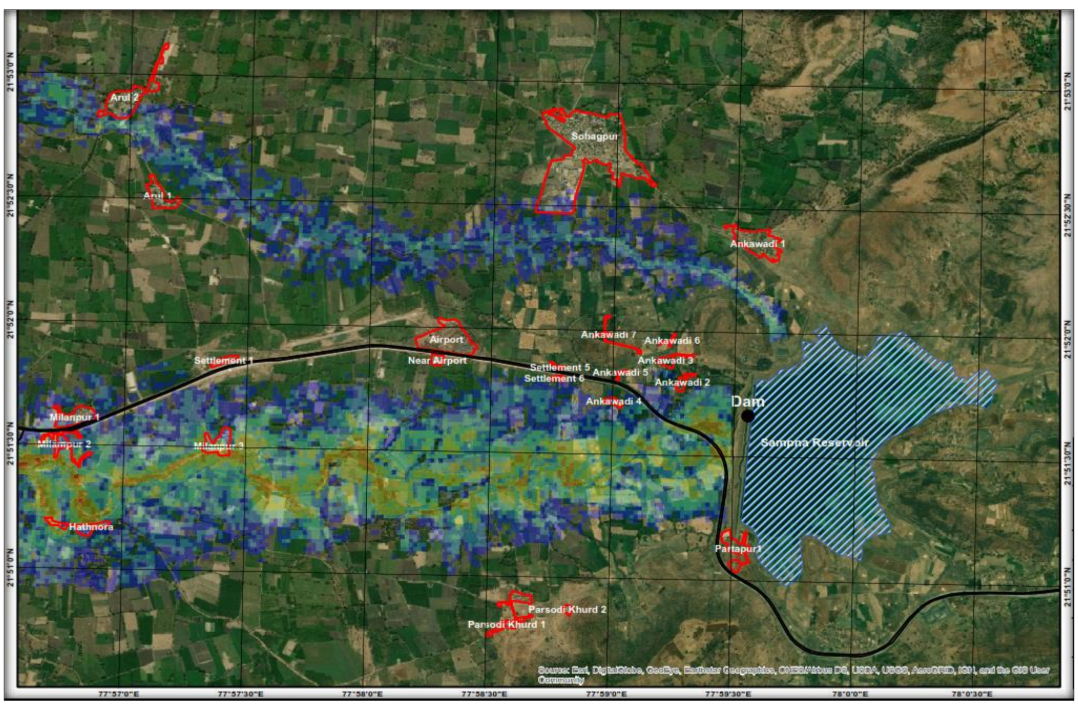

Location	Distance[a] downstream from dam (km)	Estimated population[b] (people)	Overtopping Failure			Non-flood Failure			Large Controlled Release	
			Maximum depth[c] (m)	Maximum velocity[c] (m/s)	Flood wave arrival time[d] (hh:mm)	Maximum depth[c] (m)	Maximum velocity[c] (m/s)	Flood wave arrival time[d] (hh:mm)	Maximum depth[c] (m)	Maximum velocity[c] (m/s)
Sohagpur	1.8	565	1.6	1.03	00:00	---[e]	---	---	---	---
Hathnora	4.6	284	4.74	3.51	00:45	4.3	3.16	00:50	0.9	0.41
Milanpur 1	4.6	154	1.29	0.92	00:56	0.86	0.41	00:56	---	---
Milampur 2	4.6	154	4.18	3.74	00:45	3.8	3.05	00:50	0.63	1.18
Milanpur 3	3.7	154	7.2	4.24	00:41	6.64	3.88	00:41	3.6	2.13
Betul Bazar 1	5.6	387	7.37	4.56	00:55	6.71	3.96	01:00	3.59	2.19
Betul Bazar 2	6.9	387	5.19	4.28	01:05	4.64	3.86	01:11	1.96	1.87
Betul Bazar 3	6.8	387	6.41	3.07	01:00	5.75	3.04	01:05	2.48	1.44
Ankawadi 4	0.9	71	0.67	0.26	00:41	---	---	---	---	---
Betul Bazar 3	6.8	387	6.41	3.07	01:00	5.75	3.04	01:05	2.48	1.44

[a]Approximate shortest distance downstream from dam.

[b]Estimated population within the assumed settlement boundaries.

[c]Maximum value near the specified location, which usually occurs near the center of the stream.

[d]Flood wave arrival time is the time since the initiation of the dam breach until the settlement is inundated.

[e]Location not inundated.

वाप्कोस द्वारा, मध्यप्रदेश में विगत कई वर्षों में प्रशंसनीय कार्य किया गया है जिसका प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान हुआ हैं। इसी आत्मविश्वास और देश के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय देते हुये, हम इस आपातकालीन कार्य योजना को सफल बनाएगें, जिससे न केवल जिला प्रशासन एवं बांध से जुड़े अधिकारियों को आपदा से निपटने के लिए सहायता मिलेगी अपितु जन कल्याण में **वाप्कोस की सहभागिता** का परचम भी लहरायेगा।

******

हिन्दी अब सारे देश की राष्ट्रभाषा हो गई है। उस भाषा का अध्ययन करने और उसकी उन्नति करने में गर्व का अनुभव होना चाहिए।

राष्ट्र किसी व्यक्ति या प्रांत की सम्पत्ति नहीं है, इस पर सारे देश का अधिकार है।

-सरदार वल्लभभाई पटेल

प्रेम में ही है किसी लत को मिटाने की शक्ति

साभार : नेक बने, श्रेष्ठ बने
एन.रघुरामन

जब मैं और मेरा दोस्त संयोग से उसकी इमारत के सामने उसके 19 वर्षीय बेटे से टकरा गए तो वह युवक फोन पर किसी से बतिया रहा था। जैसे ही उसने हमें देखा, उसने दूसरे छोर पर बात करने वाले से कहा, 'मैं बाद में फोन करता हूं' और फोन काट दिया। उसके पिताजी ने उससे पूछा कि फोन पर कौन था तो बैचलर कोर्स के अंतिम वर्ष के छात्र ने न सिर्फ दूसरे छोर पर बात कर रहे व्यक्ति की पूरी जानकारी दी, बल्कि दोनों के बीच हुई चर्चा का पूरा ब्योरा भी दिया। उसकी उम्र देखते हुए मुझे यह व्यवहार कुछ असाधारण लगा। पिता-पुत्र के बीच करीब तीन मिनट चर्चा हुई होगी। मुझे लगा, इस एकतरफा जानकारी का कोई ज्यादा उपयोग नहीं है।

फिर हम तीनों लिफ्ट में सवार हो गए और उनके फ्लैट में गए। मेरे मित्र ने अपनी पत्नी व परिवार के अन्य सदस्यों से मेरा परिचय कराया। अभिवादन की शुरूआती औपचारिक बातचीत के बाद वह फिर बेटे से 20 मिनट के लिए मुखातिब हो गए। शुरूआत में तो मुझे थोड़ा अजीब लगा कि वे मेरी मौजूदगी की अपेक्षा कर रहे हैं, लेकिन फिर मेरी उत्सुक्ता जागी कि पिता-पुत्र की इस सफल कैमेस्ट्री का राज क्या है - खासतौर पर तब जब बेटा 19 साल का हो? जब बेटे से उनकी बातचीत पूरी हो गई तो वे मुझसे मुखातिब हुए और मुझे इंतजार कराने के लिए खेद व्यक्त करने लगे। फिर हम दोस्त चर्चा में मशगूल हो गए और दो घंटे का समय कब बीत गया, पता ही नहीं चला। इस दौरान मेरा ध्यान उनके बेटे पर था। इन 120 मिनट के दौरान एक बार भी उसने फोन को हाथ नहीं लगाया था। न मैसेज व व्हाट्सएप चेक किया एवं मेरे साथ फोटो खींचे, और किसी को फोन लगाने का तो सवाल ही नहीं।

उस युवक का फोन कई बार वाइब्रेट हुआ, लेकिन चूंकि वह साइलेंट मोड पर था, तो बातचीत में उससे कोई खलल नहीं पहुंचा। मेरे जाने से पहले दोस्त ने बताया कि उसका बेटा 'नोमोफोबिया' (नो-मोबाइल-फोन-फोबिया, यह नाम 2010 में अमेरिकी पोस्ट ऑफिस ने गढ़ा था।) से ग्रस्त है। यह ऐसी कई समस्याओं में से है, जिनसे 'डिजिटल दुनिया' की नई पीढ़ी का सामना हो रहा है। 'नोमोफोबिया' का नाम सुनते ही मेरे मन में यह विचार कौंध गया कि अगले दो वर्ष में देश में 24.30 करोड़ किशोर होंगे और 65.10 लाख स्मार्टफोन का सैलाब आ जाएगा। देश में ब्रॉडबैंड इंटरनेट के असमान फैलाव के बावजूद जीवन के लगभग हर क्षेत्र में स्मार्टफोन और अन्य

इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के प्रति आकर्षण का जैसे विस्फोट हो गया है। इसने आखिरकार हमारे व्यवहार को उलट-पुलट कर दिया है। गैजेट्स का यह उन्माद पहले ही खुद में व्यस्त होने की लत में बदल चुका है। कई पालकों को इसमें हस्तक्षेप करने की जरूरत महसूस होती है। हालांकि, जिन पालकों का सामना नोमोफोबिया से हुआ है, उन्हें समझ में नहीं आता कि इसमें दखल किस तरह दिया जाए? इसी तरह की स्थिति में छह माह तक पिता-पुत्र के बीच बातचीत कुछ ऐसी होती थी -

पिता : फोन पर कौन था?

बेटा : (कोई जवाब नहीं।)

पिता : क्या तुम मुझे सुन रहे हो, मैं कुछ पूछ रहा हूं?

बेटा : मेरी बातचीत हो रही थी, इसलिए मैंने फोन काट दिया।

पिता : वो मैं देख रहा हूं, लेकिन बात किससे हो रही थी?

बेटा : (कोई जवाब नहीं।)

पिता : सुनाई नहीं देता क्या? मैं कुछ पूछ रहा हूं?

बेटा : कॉलेज छात्र के रूप में मेरे हजारों दोस्त हो सकते हैं, क्या मैं हर एक का नाम आपको बताऊं?

पिता : हां ।

बेटा : (व्यथित दिखाई देता है) वैसे मैने कभी आपसे पूछा है कि आप मोबाइल पर किसस से बात कर रहे थे?

अपने बेटे से ऐसा जवाब पाकर माता-पिता को बहुत धक्का लगा। उन्होंने तय किया कि वे शेष समाज से, इंटरनेट, वाई-फाई सबये खुद को डिस्कनेक्ट कर लेंगे और सिर्फ अपने बेटे से कनेक्ट रहेंगे। वे अपने बेटे के साथ सामूहिक रूप से रोज कम-से-कम छह घंटे बिताने लगे। इस युगल ने खुद को समाज से कट जाने की परवाह नहीं की, लेकिन इन छह महीनों में पिता-बेटे-माता के बीच रिश्तों में बहुत सामंजस्य स्थापित हो गया, मधुरता आ गई।

फंडा यह है कि किसी लत को खत्म करने की ताकत वाई-फाई की बजाय अपनों से जुड़ने में है।

******

गाँधी और मोदी का सपना स्वच्छ भारत हो अपना

साभार : राजभाषा भारती

हर आदमी को खुद का सफाईकर्मी होना चाहिए... स्वतंत्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण है, स्वच्छता।

\- महात्मा गांधी

भारत में स्वच्छता का नारा काफी पुराना है। हमारे पौराणिक ग्रंथों में स्नान का विशेष उल्लेख है। किसी भी कार्य से पहले हाथ धोना, स्नान करना आदि के पीछे केवल धार्मिक मान्यता ही नहीं काम करती बल्कि इनके पीछे एक वैज्ञानिक सोच-समझ भी होती थी। किसी वस्तु को मुँह लगाकर इस्तेमाल करने को भी रोका गया है। आज भी हम घर के प्रवेश-द्वार पर ही अपने जूते चप्पल उतार देते हैं। इसके पीछे धारणा है कि हम लोग गलियों की धूल, गंदगी को अपने घर के सुरक्षित हिस्से तक पहुंचाना नहीं चाहते। भारतीय संस्कृति और सभ्यता की मूल चेतना पवित्रता, शुचिता यानी स्वच्छता की रही है।

गांधी जी और स्वच्छता

21वीं सदी में महात्मा गाँधी के विचार उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके समय में थे। आज भी अनेक समस्याओं का समाधान उनमें ही निहित है, जैसे आतंकवाद, कट्टरपंथ, उग्रवाद और विचारहीन नफरत। गाँधीजी अपना शौचालय स्वयं साफ़ करते थे और आस-पास के वातावरण की स्वच्छता सुनिश्चित करते थे । वर्ष 1901 में उन्होंने कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में हिस्सा लेते समय कांग्रेस कार्यकर्ताओं को शौचालय की सफाई के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने आज़ादी के आन्दोलन के साथ ही स्वच्छता को भी अभियान के तौर पर जोड़ा था।

4 फरवरी, 1916 को बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन के अवसर पर उन्होंने स्वच्छता को स्वराज से जोड़कर देखा। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरे सपनों का भारत' में लिखा है कि अपनी गंदी आदतों से हम अपनी पवित्र नदियों के तट को बिगाड़ते हैं, मक्खियों की पैदाइश के लिए बढ़िया ज़मीन तैयार करते हैं। परिणाम यह होता है कि हमारी दंडनीय लापरवाही के कारण जो मक्खियाँ खुले मल पर बैठती हैं वे हमारे नहाने के बाद हमारे शरीर पर बैठती हैं और उन्हें गंदा बनाती हैं।

वर्ष 1925 में 'युवा भारत' लिखते समय उन्होंने कहा था, 'एक अस्वच्छ शरीर एवं अस्वच्छ दिमाग से हम भगवान की अनुकंपा प्राप्त नहीं कर सकते।' हिन्द स्वराज में उन्होंने स्वच्छता को आत्मसंयम तथा आत्मानुशासन का मूल मंत्र बताया था। 15 जनवरी, 1935 को हरिजन सेवक में उन्होंने गंदगी की समस्या से मुक्ति का मार्ग बताते हुए लिखा था, 'सब प्रकार का कूड़ा-करकट हटाकर स्थल को स्वच्छ बना लेना चाहिए। फिर उस कूड़े का वर्गीकरण कर देना चाहिए। इसमें से कुछ की तो खाद बनाई जा सकती है कुछ को सिर्फ जमीन में गाड़ देना भर काफी होगा और कुछ हिस्सा ऐसा होगा, जो सीधा संपत्ति के रूप में परिणत किया जा सकेगा। वहां मिली हुई प्रत्येक हड्डी एक बहुमूल्य कच्चा माल होगी, जिसमें बहुत-सी उपयोगी चीज़ें बनाई जा सकेंगी, पीसकर कीमती खाद बनाई जा सकेगी, फटे– पुराने चीथड़ों तथा रद्दी कागजों से कागज़ बनाए जा सकते हैं और इधर-उधर से इकट्ठा किया हुआ मल-मूत्र गांव के खेतों के लिए उपजाऊ खाद का काम करेगा।

गाँधी जी स्वच्छता को सिर्फ व्यक्तिगत तौर पर नहीं देखते थे बल्कि इसे समग्र तौर पर समाज के साथ जोड़ते हुए कहते थे कि यदि कोई व्यक्ति अपनी स्वच्छता के साथ दूसरों की स्वच्छता के प्रति संवेदनशील नहीं है, तो ऐसी स्वच्छता बेमानी है। यदि व्यक्तिगत स्वच्छता में सामूहिक स्वच्छता के प्रति उत्तरदायित्व का बोध नहीं है, तो ऐसी स्वच्छता मात्र दिखावा है। उन्होंने इस बात पर काफी ज़ोर दिया था कि सफाई की जिम्मेदारी को मात्र सरकार तथा सामाजिक संस्थाओं पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को शामिल करके एक जन आन्दोलन बनाया जाना चाहिए।

स्वच्छता के लिए प्रतिबद्ध मोदी जी

15 अगस्त, 2014 को देशवासियों के अपने नाम अपने पहले स्वतंत्रता दिवस संबोधन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि गरीबों को सम्मान की ज़रुरत है और इसकी शुरुआत स्वच्छता से होगी।' 28 सितम्बर, 2014 को अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में मेडिसिन स्कवायर गार्डन में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए मोदी जी ने कहा था, "गाँधी जी ने हमें आज़ादी दी थी। भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से मुक्त किया। भारत माँ को गंदगी से मुक्त करना, क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है? क्या हम 2019 में जब गांधी जी की 150वीं जयंती मनाएं, तब महात्मा गाँधी के चरणों में स्वच्छ साफ़ हिन्दुस्तान दे सकते हैं? जिस महापुरुष ने हमें आज़ादी दी, उस महापुरुष को हम दे सकते हैं या नहीं? देना चाहिए कि नहीं, जिम्मेदारी उठानी चाहिए कि नहीं उठानी चाहिए? अगर एक बार 125 करोड़ देशवासी तय कर लें कि मैं गंदगी नहीं करूंगा तो दुनिया कि कोई ताकत नहीं है, जो हिंदुस्तान को गंदा कर सकती है।"

2 अक्तूबर, 2014 के दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में वह स्वर्णिम, ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण दिन था जब उन्होंने स्वयं सड़क की सफाई में हिस्सा लेकर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ किया। 'स्वच्छ भारत अभियान' को 'क्लीन इंडिया मिशन' या 'क्लीन इंडिया ड्राइव' भी कहा जाता है। उन्होंने हर भारतीय से इस मिशन में शामिल होकर इसे सफल बनाने की अपील भी की। इसमें बच्चों को भी शामिल किया गया। उन्होंने कहा कि इस अभियान के अंतर्गत प्रतिवर्ष 100 घंटे देशवासी दें तो 'स्वच्छ भारत अभियान' सफल हो सकता है।

स्वच्छता : एक चुनौती

दुनिया में शौचालय की सुविधा से वंचित हर तीसरा व्यक्ति भारत में रहता है। विश्व में कुल 2.3 अरब लोगों के पास शौचालय नहीं हैं। इसमें से 77 करोड़ भारतीय हैं। शौचालयों की कमी और खुले में शौच करने की मजबूरी के कारण सेहत संबंधी समस्याएं सामने आ रही हैं। जैसे-जैसे शहर का आकार बढ़ता जाता है वैसे-वैसे प्रति व्यक्ति कचरे का उत्पादन भी बढ़ता जाता है। भारत में प्रतिदिन 1.6 लाख टन कूड़ा निकलता है जिसमें से लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा हम नष्ट या रिसाइकिल कर पाते हैं। बाकी का हमारे आस-पास ही पड़ा रहता है।

आज भी कई बड़े शहरों में कूड़ा डालने और उसकी प्रॉसेसिंग की कोई सुदृढ़ व्यवस्था नहीं है। शहर का मास्टर प्लान बनाते समय अक्सर डम्पिंग ग्राउंड या लैंडफिल साइट बनाने पर ध्यान नहीं दिया जाता। कई शहरों में तो सीवर लाइनें ही बहुत कम लोगों को ध्यान में रखकर डाली गई हैं। पांच साल के अंदर सीवर सिस्टम जवाब दे जाता है। इसका एक उदाहरण मुंबई का है, जहां प्रत्येक वर्ष मानसून में आम लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। अभी यह भी देखने में आया है कि गाँवों में जिन लोगों के यहाँ शौचालय बन गए हैं, वे भी उनका प्रयोग नहीं कर रहे हैं। ग्रामीणों द्वारा अपने निजी शौचालयों का प्रयोग लकड़ी, कूड़ा, भूसा इत्यादि सामान रखने के लिए किया जा रहा है। घर के भीतर शौच को वे अब भी अपवित्र मानते हैं।

खुले में शौच एवं शौचालयों की विभिन्न देशों में स्थिति इस प्रकार है – खुले में शौच को मजबूर देशों की जनसंख्या करोड़ों में इस प्रकार है – भारत 56.74, इंडोनेशिया 5.22, पाकिस्तान 2.51, बुर्कीना पासो 0.99, नेपाल 0.90, कंबोडिया 0.74, बेनिन 0.59, नाइजीरिया 0.46, हेती 0.20 । जिन व्यक्तियों के पास शौचालय नहीं हैं, उन देशों और व्यक्तियों की संख्या करोड़ में इस प्रकार है – भारत 77.4, चीन 32.9, नाइजीरिया 13, इंडोनेशिया 10, इथोपिया 7.12, पाकिस्तान 6.86, बांग्लादेश 6.32, कांगो 5.08, तंजानिया 4.4, रूस 3.9 ।

गंदगी अर्थात बीमारी को बुलावा

संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार, विश्व में रक्षा पर जितना खर्च किया जाता है, उसका एक प्रतिशत भी स्वच्छता पर व्यय नहीं होता। उसके अनुसार जैसे माचिस की एक तीली सम्पूर्ण दुनिया को स्वाहा करने की ताकत रखती है, उसी तरह बहुत सूक्ष्म मात्रा में की गई गंदगी भी महामारी फैला सकती है। उदाहरण के लिए, एक ग्राम मल में एक करोड़ विषाणु हो सकते हैं, एक हज़ार परिजीवी हो सकते हैं और और सौ परिजीवियों के अंडे हो सकते है।

कचरा 22 तरह की बीमारियों का कारण बनता है। इस कारण एक व्यक्ति पर सालाना 6.50 हज़ार रूपये का आर्थिक बोझ आता है। विश्व में हर वर्ष गंदगी से होने वाली बीमारियों से 15 लाख बच्चों सहित 2.6 करोड़ लोग मर जाते हैं। 18 लाख लोग डायरिया से मरते हैं, जिनमें 90 प्रतिशत पांच वर्ष से कम आयु के बच्चे होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार देश में हर साल डेढ लाख बच्चे डायरिया के कारण पांच साल से कम उम्र में मौत के मुंह में समा जाते हैं। गर्भवती महिलाएं भी जानलेवा बीमारियों का शिकार बनती हैं। 40 प्रतिशत बच्चों का कद औसत लम्बाई से कम रह जाता है।

खुले में शौच की प्रवृति के चलते जल–खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं। चिकित्सकों के अनुसार त्वचा श्वसन, नेत्र, आंत, गुर्दे, तपेदिक, गिल्टी रोग जैसी अनेक बीमारियां खुले में शौच करने के चलते अपने पाव पसारती हैं। देश में दो दर्जन से अधिक बीमारियों के लिए गंदगी जिम्मेवार है। हैजा, कॉलरा, डेंगू, मलेरिया, पेचिश, फाइलेरिया, पेट की बीमारियां तथा चर्म रोगों आदि जैसी बीमारियों से विश्व में हर वर्ष 15 लाख से अधिक मौत होती हैं।

स्वच्छता के लाभ

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में गंदगी के कारण प्रत्येक नागरिक को सालाना औसतन 6400 रूपये का नुकसान होता है। विश्व के 2.5 अरब लोगों के पास विधिवत सफाई व्यवस्था नहीं है । स्वच्छ्ता के सही तरीके अपनाकर भारत 32.6 अरब डॉलर हर साल बचा सकता है। विश्व बैंक के अनुसार, अगर शौचालय के इस्तेमाल में वृद्धि की जाए, स्वच्छता के तरीके अपनाए जाएं तो स्वास्थ्य पर पड़ने वाले समग्र असर को 45 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। रसोई के कचरे को बायो गैस में परिवर्तित करने की प्रक्रिया से कृत्रिम उर्वरकों के लिए एक विकल्प के रूप में काम आ सकता है। इससे वातावरण में जारी ग्रीन हाउस गैस की मात्रा कम हो सकती है।

विश्व बैंक के अनुसार, स्वच्छता कमी के कारण भारत में 40 प्रतिशत बच्चों का शारीरिक और बौद्धिक विकास नहीं हो पाता। स्वच्छता की कमी से होने वाला नुकसान, जितना यह ऊपर से नज़र आता है उससे कहीं अधिक है। विश्व बैंक के अनुसार, स्वच्छता के अभाव से भारत को उसकी जीडीपी के छ: प्रतिशत का नुकसान होता है । यूनिसेफ के एक अध्ययन के अनुसार, खुले में शौच से मुक्त गांवों में प्रति परिवार के साल में 50,000 रूपये की बचत हुई। यह बचत दवाओं पर होने वाले खर्च में आई कमी तथा समय व जीवन बचने से हासिल हुई। एक शोध के अनुसार भारत में स्वच्छता के एक बड़े बाज़ार की पर्याप्त संभावनाएं हैं । वर्ष 2007 से 2020 के दौरान यह बाज़ार 152 अरब डॉलर (64 प्रतिशत) इन्फ्रास्ट्रक्चर, 54 अरब डॉलर (36 प्रतिशत) प्रचालन और रख-रखाव सेवाओं के लिए होगा। साफ़–सफाई से जुड़े बाज़ार की सालाना वृद्धि 2007 में जहां 6.6 अरब डॉलर की है, 2020 में यह 15.1 अरब डॉलर होगी।

शौचालयों की स्थिति

दुनिया की कुल सात बिलियन आबादी में छह बिलियन के पास मोबाइल फोन हैं, जबकि टॉयलेट इनमें से 4.5 बिलियन के पास ही हैं। 1.1 बिलियन लोग खुले में मल त्याग करते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन और यूनिसेफ के जॉइंट मॉनीटरिंग प्रोग्राम प्रोग्रेस ऑन डिक्रिंग वॉटर सैनिटेशन एंड हाईजीन – 2017 के अनुसार, विश्व में लगभग 2.3 अरब लोगों को साफ सफाई की मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती हैं। इनमें से 89.2 करोड़ लोग या तो खुले शौच करते हैं या बिना प्लेटफॉर्म वाले गड्ढों, उंचे मचान पर बनाए गए शौचालयों और बाल्टियों जैसे कामचलाऊ तौर – तरीकों का इस्तेमाल करते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, राष्ट्रीय स्वच्छता कवरेज 46.9 प्रतिशत है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह औसत केवल 30.7 प्रतिशत है। देश की 62 करोड़ 20 लाख की आबादी (राष्ट्रीय औसत 53.1 प्रतिशत) खुले में शौच करने को मजबूर थी। वर्ष 2011 की जनगणना की रिपोर्ट के अनुसार, गांव के 67.3 प्रतिशत घरों या 1.30 करोड़ लोगों के पास शौचालय सुविधा उपलब्ध नहीं है। बाकि 36.4 प्रतिशत आबादी के पास वॉटर क्लोजेस्ट तथा 9.4 प्रतिशत के पास गड्ढों वाले शौचालय (पिट लैटरिन्स) हैं।

आज भी देश में प्रात:काल में लोगों को सड़क और रेलवे लाइनों के किनारे शौच करने के लिए बैठे देखा जा सकता है। लोग थूकने और पेशाब करने के लिए सही जगह तलाशने की बजाए इधर–उधर कहीं भी कर देते हैं। भारत के 59.4 करोड़ लोग खुले में शौच करते हैं। भारत के गांवों में मात्र 21 प्रतिशत आबादी अच्छी सफाई व्यवस्था का प्रयोग करती है। 31 प्रतिशत आबादी बेहतर सफाई वयवस्था का इस्तेमाल करती है । 5 साल से कम उम्र के मात्र 6 प्रतिशत बच्चे शौचालय का प्रयोग करते हैं। सफाई के अभाव में भारत को जीडीपी का 6 से 7 प्रतिशत तक नुकसान उठाना पड़ता है।

स्वच्छता कार्यक्रम

केन्द्र सरकार के द्वारा प्रायोजित 'सस्ती सफाई योजना की शुरूआत वर्ष 1980-81 में गृह मंत्रालय के अधीन हुई थी ताकि सफाई कर्मचारियों को इस कार्य से मुक्त किया जा सके। बाद में इसे कल्याण मंत्रालय ने अपने हाथ में ले लिया। वर्ष 1989-90 से यह योजना शहरी विकास मंत्रालय के द्वारा चलाई गई। फिर उसके बाद शहरी रोजगार ओर गरीबी उपशमन मंत्रालय के द्वारा इसे कार्यान्वित किया गया। वर्ष 1986 में 'केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम' वर्ष 1999 में 'सम्पूर्ण स्व्च्छता अभियान' और वर्ष 2012 में 'निर्मल भारत अभियान' को भी स्व्च्छता के उद्देश्य से शुरू किया गया था। वर्ष 2008 में 'अंतर्राष्ट्रीय स्वच्छता वर्ष' मनाया गया था, लेकिन से सभी कार्यक्रम अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं कर सके और देश कूड़े के ढेर से दबता रहा। संयुक्त राष्ट्र ने शौचालय युक्त विश्व बनाने के लिए सदस्य देशों से सहयोग मांगा और 19 नवम्बर को 'संयुक्त राष्ट्र टॉयलेट डे' घोषित किया गया है।

स्वच्छता की दिशा में बढ़ते कदम

'स्वच्छ भारत अभियान' की अवधि 2 अक्टूबर, 2014 से 2 अक्टूबर, 2019 तक की तय की गई थी। इस मिशन का उद्देश्य था - पांच वर्षों के दौरान 11.11 करोड़ शौचालयों का निर्माण करना, सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले गांवों को पुरस्कृत किया जाए, सरकारी दफ्तरों के लिए भी सफाई के नियम तय किए गए हैं, इस मिशन में एम.पी., एम.एल.ए. और सरपंच आदि जनप्रतिनिधि खास भूमिका निभाएंगे, गंगा किनारे बसे शहरों व कस्बों में सफाई अभियान को वरीयता दी गई है। पिछले पांच वर्षों में 'स्वच्छ भारत अभियान' के लिए ग्रामीण और शहरी इलाकों का बजट करोड़ रूपये में इस प्रकार रहा - वर्ष 2015-16 ग्रामीण 6,525 एवं शहरी 1,000, वर्ष 2016-17 ग्रामीण 10,500 शहरी 2,300, वर्ष 2017-18 ग्रामीण 16,948 एवं शहरी 2,300, वर्ष 2018-19 ग्रामीण 15,343 एवं शहरी 2,500 और वर्ष 2019-2020 ग्रामीण 9,994 एवं शहरी 2,650।

'स्वच्छ भारत अभियान' के सफल संचालन का दायित्व 'पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय (एम.डी.डब्ल्यू.एस.) को दिया गया है। इसके द्वारा सभी मंत्रालयों, विभागों और संगठनों द्वारा किए जा रहे साफ-सफाई के प्रयासों की देख-रेख एवं निगरानी की जा रही है। पूरे देश में स्वच्छता कार्यक्रमों की अद्यतन प्रगति की जानकारी के लिए एक व्यापक प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.) का विकास किया गया है। इसे मंत्रालय की वेबसाइट पर देखा जा सकता है। केन्द्र सरकार की ओर से कराए गए स्वच्छ सर्वेक्षण 2019 में इंदौर ने सबसे स्वच्छ शहर का तमगा हासिल करके हैट्रिक लगाई है। सर्वे में छत्तीसगढ़, झारखण्ड और महाराष्ट्र को स्वच्छता

में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले देश के तीन राज्यों में गिना गया है, जबकि उत्तराखण्ड के गौचर को गंगा किनारे बसे सर्वश्रेष्ठ कस्बे का गौरव प्राप्त हुआ है।

देश में स्वच्छता को लेकर बने माहौल का असर यह है कि आज गांवों में कई लडकियों ने अपनी ससुराल में शौचालय बनाने पर जोर दिया और इसके लिए डटी रहीं। यहां तक कि शौचालय न होने के कारण शादी तक से इंकार कर दिया। यूनीसेफ की स्कूलों में पेयजल, स्वच्छता और साफ-सफाई वैश्विक आधारभूत रिपोर्ट, 2018 के अनुसार, भारत के लगभग सभी विद्यालयों में साफ-सफाई की सुविधाओं का विकास हो चुका है। ऐसी सुविधाएं वर्ष 2006 में सिर्फ 50 प्रतिशत विद्यालयों में ही थीं।

गोवा को छोड़कर बाकी सभी राज्यों ने ग्रामीण इलाकों में प्रति व्यक्ति शौचालय के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। बिहार और ओडिशा को छोड़कर अन्य सभी राज्य और केन्द्र शासित प्रदेशों के गांव खुले में शौच करने से मुक्त हो चुके हैं। अक्टूबर, 2014 में 38.70 प्रतिशत शौचालय थे, जो बढ़कर सितम्बर, 2019 तक लगभग 99.99 प्रतिशत घरों में शौचालय बन चुके हैं। वर्ष 2014 में 70 प्रतिशत लोग खुले में शौच करते थे, अब घटकर वर्ष 2018 में मात्र 44 प्रतिशत रह गए हैं। इस दौरान 37 प्रतिशत शौचालयों तक लोगों की पहुंच बढ़कर वर्ष 2018 में 71 प्रतिशत हो गई है।

स्वच्छता संबंधी सुझाव

गंदगी से निपटना आसान नहीं है, लेकिन यदि गंदगी फैलाने वालों के खिलाफ कड़े नियमों और खासकर आर्थिक दण्ड का सहारा लिया जाए तो चीन और पश्चिम एशिया के कई देशों के समान हमें भी इस काम में कामयाबी मिल सकती है। दिल्ली की मैट्रो रेल इसका उदाहरण है, जहां पर आर्थिक दंड के कानून के कारण काफी हद तक सफाई का लक्ष्य प्राप्त किया हुआ है। भारत में मनुष्यों द्वारा मल-मैला ढोने का चलन वर्ष 1993 में प्रतिबंधित कर दिया गया था, लेकिन अभी भी देश के कुछ भागों में शुष्क शौचालयों से मैला ढोकर ले जाने के रूप में यह जारी है। चलती ट्रेनों में ट्रैक पर गिरे मल-मूत्र को साफ करवाने के लिए रेलवे सफाई कर्मियों को जुटाता है। इस पर भी रोक लगेगी।

प्रत्येक घर में शौचालय होना बहुत जरूरी है और खुले में शौच करने की प्रवृति को बंद करना आवश्यक है। नगर के कचले का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू किया जाना चाहिए। पूरे भारत में साफ-सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना आवश्यक है। कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा मे परिवर्तित किया जाना चाहिए। साफ-सफाई के लिए लोगों को प्रेरित किया जाना चाहिए।

विभिन्न देशों में स्वच्छता पर नियम

पूरी दुनिया में टॉयलेट और सेनिटेशन की स्थितियों को बेहतर बनाने के लिए डब्ल्यू.टी.ओ. यानी वर्ल्ड टॉयलेट ऑर्गेनाइजेशन की स्थापना वर्ष 2001 मे की गई थी। 15 सदस्यों के साथ शुरू हुआ, यह संगठन 53 देशों में 151 मेम्बर आर्गेनाइजेशनों के माध्यम से काम कर रहा है। यह संगठन नियमित रूप से वर्ल्ड टॉयलेट समिट और वर्ल्ड टॉयलेट एक्सपो का आयोजन करता है। यह नॉन प्रॉफिट संगठन है। कूड़ा-करकट या कचरे की समस्या केवल विकासशील देशों से नहीं जुड़ी है।

कई देशों में कूड़ा और गंदगी फैलाने वालों के लिए सख्त दंड का प्रावधान है। कुछ देशों में कंटेनर डिपोजिट कानून बनाए गए हैं। इसके अंतर्गत लोगों को कूड़ा जमा करने के लिए प्रेरित किया जाता है। जर्मनी, न्यूयार्क, नीदरलैंड और बेल्जियम में इस तरह के कानून हैं। अमेरिका में 500 डॉलर का अर्थदंड या सामुदायिक सेवा अथवा दोनों सजाएं हो सकती हैं। ब्रिटेन में दोषी को अधिकतम 2,500 पौंड का अर्थदंड लग सकता है। जापान में जियोग्राफिक इंफॉर्मेशन सिस्टम का इस्तेमाल करके गंदगी फैलाने वालों पर निगाह रखी जाती है। उत्तरी अमेरिका में राजमार्गों के सफाई अभियान चलाए जाते हैं ताकि सभी गंदगी को साफ किया जा सके। केन्या के एक शहर में कूड़े से कलाकृतियां बनाकर बेची जाती हैं। ऑस्ट्रेलिया में राज्यों के स्तर पर कानून एवं अर्थदंड का प्रावधान है। नीदरलैंड की गलियों में कूडा़ फेंकने पर पुलिस जुर्माना कर सकती है।

अंत में

प्रत्येक वर्ष 'स्वच्छता दिवस' 2 अक्टूबर के अवसर पर स्वच्छता के लिए शपथ ली जाती है। 'स्वच्छता अभियान' में अमिताभ बच्चन, रतन टाटा, श्री श्री रविशंकर, माता अमृतानंदमयी, गुरू जग्गी वासुदेव के अलावा पटना साहेब गुरूद्वारा और अजमेर दरगाह के प्रमुख सेवक भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। स्वच्छ समाज के निर्माण का हमारा सपना तब साकार होगा जब हम अपनी सोच में बुनियादी बदलाव लाएंगे। देश को गंदगी से मुक्त करना केवल सफाई कर्मचारियों का काम नहीं है। इसमें हम सबकी जिम्मेदारी भी है। समाज का हर वर्ग, हर तबका यह जान ले कि अगर आज हमें अपने जीवन का स्तर ऊंचा उठाना है, तो हमें अपने शहरों, गलियों और देश को स्वच्छ बनाना होगा।

अंत में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का कथन, ''एक हजार गांधी आएं, एक लाख मोदी आएं, सभी मुख्यमंत्री और सरकारें आएं, फिर भी स्वच्छता का स्वप्न तब तक पूरा नहीं होगा जब तक सवा सौ करोड़ जनता सहयोग की भावना से इस अभियान से नहीं जुड़ती।'' आज आवश्यकता है, मोदी जी के कथन को व्यवहार में लाने की। तभी हम गांधी जी का सपना और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की स्वच्छता के प्रति प्रतिबद्धता और आकांक्षा को साकार कर सकेंगे।

******

सुचेता कृपलानी
प्रथम मुख्यमंत्री

साभार : भारत की प्रथम महिलाएं

सामाजिक वास्तविकता को आज भी सही रूप में नहीं, पक्षपात की दृष्टि से देखा जा रहा है; पर आज का स्वीकृत ध्येयवाद परिवर्तन की मांग कर रहा है। भारतीय स्त्री में निहित सहनशीलता और सहानुभूति की शक्ति के बल पर वह सामाजिक क्रान्ति की अग्रणी बन सकती है। अत: स्त्री के नवीन नेतृत्व को, उसके भविष्य को आशामय रूप में देखकर सामाजिक प्रतिगामी शक्तियों से हमें अर्थपूर्ण चर्चा कर लेनी है।" ये विचार थे श्रीमती सुचेता कृपलानी के, जो सामाजिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में सफल नेतृत्व की क्षमता रखती थीं।

भारतीय राज्यों में उत्तर प्रदेश ने विजयलक्ष्मी पंडित को प्रथम कांग्रेस मंत्रिमंडल में मंत्री पद देकर और सरोजिनी नायडू को राज्यपाल बनाकर इस दिशा में पहल कर ही ली थी। श्रीमती सुचेता कृपलानी भी इसी राज्य की मुख्यमंत्री बनकर भारत की 'पहली महिला मुख्यमंत्री' कहलाईं। उत्तर प्रदेश का यह गौरव समस्त भारतीय महिलाओं का गौरव रहा।

सुचेता जी को एक ऐसी महत्त्वाकांक्षिणी महिला माना जाता था, जिनकी आकांक्षाएँ देश की ओर अभिमुख थीं और उसकी उन्नति के साथ जुड़ी थीं। सामाजिक व रचनात्मक क्षेत्रों में काम करती हुई एक-एक पग वे आगे बढ़ती गईं। महिलाएं, शरणार्थी, श्रम-संगठन, सेवा समितियाँ, कांग्रेस संगठन, विदेशों में भारतीय प्रतिनिधित्व, रचनात्मक कार्यक्षेत्र और राजनीतिक दाँव-पेंच—सभी उनकी रुचि के विषय रहे। वे जन्म से बंगाली थीं। उनकी शिक्षा हुई लाहौर और दिल्ली में तथा वे मुख्यमंत्री बनी उत्तर प्रदेश की। जब गुप्त मंत्रिमंडल में उन्हें श्रममंत्री का पद दिया गया तो कइयों को यह अच्छा नहीं लगा, क्योंकि उत्तर प्रदेश से उनका कोई सीधा सम्बन्ध पहले नहीं रहा था। यद्‌यपि बनारस हिन्दू विश्वविद्‌यालय में वे नौकरी कर चुकी थीं। यों सन 1948-50 में दो वर्ष तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या भी रही थीं, पर इस अवधि में कांग्रेस दल की और संविधान सभा की सदस्या के नाते वे उसी कार्य में अधिक व्यस्त रहीं थीं।

श्रम मंत्री बनने के तीन वर्ष बाद 2 सितम्बर, 1963 को उन्हें विधानसभा का नेता चुन लिया गया और 2 अक्टूबर को वे मुख्यमंत्री बन गईं। यह एक ऐसा काँटों का ताज था, जिसे पहनने में गरिमा भी थी, चुभन भी। प्रदेश की गुटबंदी, दलबंदी, सत्ता लिप्सा और षडयंत्रों भरी राजनीति उन्हें विरासत में मिली थी। एक तो उत्तर प्रदेश जैसा विस्तृत और पिछड़ा हुआ राज्य, जो पूरे देश

के 17 प्रतिशत और देश की पिछड़ी जनता के 35 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है तथा जिसकी 87 प्रतिशत जनता गाँवों में बसती है, दूसरे विरासत में मिली बाधाओं-कठिनाइयों से अंटा वातावरण, श्रीमती कृपलानी के लिए यह एक बड़ी चुनौती थी। पर उन्होंने चुनौती को स्वीकार ही नहीं किया, मंत्रिमंडल बनाते समय अपनी दृढ़ता का परिचय भी दिया। एक ओर आतंरिक दलबंदी, दूसरी ओर असंतुष्ट वर्ग को मंत्रिमंडल में शामिल करने के हाई कमांड के आदेश – बड़ी कठिन स्थिति थी। मंत्रिमंडल गठन के प्रश्न पर तथा कुछ सभा सचिवों की नियुक्ति को लेकर उन्हें दो बार हाई कमांड से उलझना पड़ा। विधानसभा में विरोधी दलों द्वारा सरकार की आलोचना के समय मंत्रिमंडल के अपने सहयोगियों के उदासीन रवैए के कारण कई बार निराश भी होना पड़ा; पर श्रीमती कृपलानी कभी विचलित नहीं हुईं। वे जानती थीं कि दलगत राजनीती में कभी भी शतरंज के मोहरे पर उनके नेतृत्व की बलि दी जा सकती है, पर जब तक (अक्टूबर 1963 से मार्च 1967 तक) मुख्यमंत्री रहीं, उन्होंने सभी विरोधों-बाधाओं का डटकर मुकाबला किया।

एक बार जब मैंने उनसे पूछा कि महिला मुख्यमंत्री के नाते पुरुष सहयोगियों से ही नहीं, उनके परम्परागत संस्कारों-मनोविज्ञान से भी निबटने के उनके अनुभव क्या हैं? तो उत्तर में उन्होंने बड़े मार्मिक और अर्थपूर्ण ढंग से कहा, "आपका प्रश्न सार्थक है। पुरुष मन से नारी की श्रेष्ठता या सत्ता को कभी स्वीकार नहीं करता। प्रारंभ में वह इस भ्रम का भी शिकार होता है कि अब कुछ मनमानी करने की छूट है और हस्तक्षेप की संभावना कम है। फिर भी, जैसे ही नेत्री या प्रशासक नारी अपनी बुद्धिमत्ता, सूझ-बूझ, सूक्ष्म दृष्टि और दृढ़ता का परिचय देती है, उसके भ्रम का निवारण हो जाता है। लेकिन भ्रम-निवारण के बाद भी कुंठाएं तो रहती ही हैं, जिनसे निबटना होता है। मुझे इसका खासा अनुभव है।"

सुचेता कृपलानी का जन्म जून 1908 में अम्बाला में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा लाहौर में हुई, फिर एम.ए. दिल्ली विश्वविद्यालय से किया। राष्ट्रीयता और खादी के पारिवारिक परिवेश में पलकर स्वाधीन भारत के सपने वे बचपन में ही देखने लगी थीं। बनारस हिंदु विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के रूप में काम करते हुए भी उनकी भावनाएं देश-सेवा के लिए उद्वेलित हो रही थीं। फिर सन 1932 से सार्वजनिक क्षेत्र में और सन 1939 से राजनीति में कूद पडीं। बाढ़-पीड़ितों की सेवा, भूकंप-पीड़ितों के लिए राहत कार्य, फिर विभाजन के बाद शरणार्थी पुनर्वास, महिला संस्थाएं, कांग्रेस संगठन, श्रमिक संघ – सभी उनके कार्यक्षेत्र बनते गए। सन 1939 तक उन्होंने सामने न आकर गुप्त रूप से कार्य किया, फिर कांग्रेस में शामिल हो स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने लगीं। सन 1940 व 1944 में दो बार जेल भी गईं। सन 1942 में 'भारत छोड़ो आन्दोलन' के समय अग्रणी युवा उत्साही कार्यकर्ताओं में उनका नाम लिया जाता था। कुछ समय भूमिगत रहकर उन्होंने कांग्रेस सेवादल और महिला कार्यकर्ता टोलियों के प्रशिक्षण का भार संभाला, फिर

गिरफ्तार कर जेल भेज दी गईं। जेल से छूटने के बाद तो वे कभी जनता की आँखों से ओझल हुई ही नहीं।

सन 1941-42 में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महिला विभाग में, विदेश विभाग में, मंत्री पद पर, 1945 में कस्तूरबा ट्रस्ट के संगठन मंत्री पद पर उनकी नियुक्ति हुई। सन 1949 में संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा अधिवेशन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल की सदस्या थीं तो 1954 में टर्की भेजे गए संसदीय प्रतिनिधिमंडल की तथा 1961 में अन्तरराष्ट्रीय श्रम संगठन के सम्मलेन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल के नेत्री। इसी तरह सन 1956 में राष्ट्र संघ द्वारा आयोजित 'एशियाई महिलाओं की नागरिक जिम्मेदारियां' सम्मेलन में भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी उन्होंने ही किया था, क्योंकि तब तक महिलाओं के रचनात्मक क्षेत्र में वे काफी काम कर चुकी थीं। सन 1946 में केन्द्रीय संविधान सभा की सदस्या रहने के बाद 1950-52 में संसद की अस्थायी सदस्या रहीं। कांग्रेस कार्यकारिणी में उन्होंने सन 1948-51 में सदस्या के नाते तथा 1958-60 में महामंत्री के नाते काम किया। बीच में सन 1951 में कांग्रेस से त्यागपत्र देकर वे किसान-मजदूर प्रजा पार्टी में शामिल हो गई थीं और 1952 व 1957 के चुनावों में लोकसभा के लिए प्रजा समाजवादी पार्टी से ही निर्वाचित हुई थीं। इसके बाद पुन: कांग्रेस में शामिल हो सन 1962 व 1967 में कांग्रेस के टिकट पर चुनाव जीतकर लोकसभा में आईं।

आचार्य जे.बी.कृपलानी जैसे असहिष्णु जन-नेता से विवाह करने के कारण तथा आपसी राजनीतिक मतभेदों के कारण अक्सर लोगों को भ्रम होता था कि सुचेताजी का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा; लेकिन यह उनका भ्रम था। सुचेता आचार्यजी के स्वभाव को झेलने के साथ उनकी सुख-सुविधा का पूरा ध्यान रखती थीं तथा आचार्यजी कृपलानी सुचेता के व्यक्तितत्व को स्वत: विकसित होने देने के लिए पूरे अवसर प्रदान करते थे। उनका पारिवारिक और दाम्पत्य जीवन अत्यंत आनंदी किस्म का रहा, जो उन्हें अलग-अलग क्षेत्रों में कार्य करने के लिए शक्ति व प्रेरणा प्रदान करता था। सुचेता जी ने एक बार कहा था, "राजनीति में मैं अपने पति की वजह से हूँ, वरना मेरी रुचि तो मुख्यत: संगीत और सामाजिक कार्यों में ही है।" मुख्यमंत्री पद छोड़ने के कुछ समय बाद उन्होंने मुझसे एक भेंट में कहा था, "राजनीति में मेरी रुचि नहीं है; पर जो काम लेती हूँ उसे पूरी रुचि व दृढ़ता के साथ निभाने का प्रयत्न करती हूँ। वैसा मेरा असली कार्यक्षेत्र समाज है। अब मैं सामाजिक कार्यों में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करना चाहती हूँ।

एक पुरानी तपोनिष्ठ कार्यकर्त्री के नाते ही उनके मुख्यमंत्रित्व काल में अपनी शिकायतें लेकर उनसे भेंट करने वाले नागरिकों में 60 प्रतिशत संख्या महिलाओं की होती थी। वे अधिकतर अपनी निजी समस्याएं लेकर उनके पास फ़रियाद करने पहुँच जाती थीं। कई बार सुचेता जी उन्हें समझा-बुझाकर भेज देतीं तो कई बार अपने अधिकार का प्रयोग कर उनकी सहायता भी करतीं।

एक मामले में एक पत्नी की शिकायत थी कि उसके पति ने कोशिश करके अपना तबादला वहां करवा लिया है, जहां उसकी प्रेमिका रहती है। उन्होंने उसके पति का तबादला रद्द करवा दिया था। इसी तरह एक दूसरी महिला ने फरीयाद करके अपनी पत्र-मित्र लड़की के पास जाने वाले अपने पति का पासपोर्ट रद्द करवा दिया था। यदि सुचेताजी मुख्यमंत्री बनने से पूर्व एक लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्त्री के रूप में विख्यात न होतीं तो ऐसी नितांत व्यक्तिगत समस्याएं लेकर नागरिक महिलाएं उनके पास नहीं जा सकती थीं।

दिसम्बर 1974 में सड़सठ वर्ष की आयु में श्रीमती सुचेता कृपलानी का निधन हो गया। अपने अंतिम काल में वह कांग्रेस से निराश हो जनता पार्टी में शामिल हो गईं थीं। पर राजनीति अब उन्हें विशेष रास नहीं आती थी। मुख्यमंत्री पद के दायित्व से मुक्त होने के बाद वे अपना ध्यान सामाजिक संस्थाओं में ही अधिक लगा रही थीं। राजधानी में 'लोक कल्याण समिति' जैसी उपयोगी संस्थाएं उन्हीं की देन हैं।

******

जागो अब भी देर नहीं है

हितेष व्यास
वरि. अभियंता

जागो अब भी देर नहीं है, दोपहर हुई है, रात नहीं है
उठकर जल्दी अवसर पकड़ो, डरने की कोई बात नहीं है ॥

अब भी पूरा दिन है बाकी, धूप है बाकी-छाँव है बाकी,
संध्या की बरात है बाकी, मौको की बरसात है बाकी,
भूख है बाकी-प्यास है बाकी, घरवालों की आस है बाकी,
नग है बाकी, नीर है बाकी, कड़वा बाकी-खीर है बाकी,
पेड़ है बाकी-काठ है बाकी, बहुत से बचे हुए पाठ है बाकी,
साज, सुगंध, सृजन है बाकी, नारायण को नमन है बाकी,
समय है बाकी साथ है बाकी, मेहनत करले, हाथ है बाकी,

जागो अब भी देर नहीं है, दोपहर हुई है, रात नहीं है
उठकर जल्दी अवसर पकड़ो डरने की कोई बात नहीं है ॥

******

सुबह का खाना सबसे अच्छा

डी.के.सेठी
प्रबन्धक (रा.भा.का.)

दोस्तों काफी समय से हमारे भोजन की दिनचर्या अत्यधिक बिगड़ चुकी है क्योंकि ना तो हम अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन करते हैं और ना ही सही समय पर भोजन कर पाते हैं। दोस्तों देर रात में भोजन करना सबसे अधिक हानिकारक होता है क्योंकि उस समय हमारी जठराग्नि सबसे धीमी होती है जिस कारण हमारे भोजन का पाचन अच्छी तरह से नहीं हो पाता है और वह सड़कर हमारे शरीर में कई प्रकार की बीमारियों को जन्म देता है। सूर्य के प्रकाश के ताप से दिन में जठराग्नि सबसे ज्यादा सक्रिय रहती है जो भोजन के पाचन के लिए सबसे ज्यादा उत्तम होती है। इसलिए महर्षि वागभट्ट जी ने कहा कि प्रात: काल सूर्योदय से ढाई घण्टे के अन्दर ही हमें भरपेट भोजन कर लेना चाहिए क्योंकि उस समय जठराग्नि सबसे तीव्र होती है, फिर दोपहर के बाद सूर्यास्त से पहले भोजन ग्रहण कर लेना चाहिए क्योंकि सूर्यास्त के बाद जठराग्नि धीमे होने लगती है इसलिए रात में भोजन ना करें। दोस्तों आज की इस दौड़धूप और नौकरी पेशा वाली जिन्दगी में महर्षि वागभट्ट जी के इस नियम का पालन करना बहुत मुश्किल है, परन्तु हम इतना तो अवश्य कर सकते हैं कि रात का भोजन जितनी जल्दी कर सके कर लेना चाहिए।

दोस्तों आप सभी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि खाना खाने के बाद हमें पानी नहीं पीना चाहिए, बल्कि लगभग एक घंटे बाद पीना चाहिए। फिर भी यदि हमें खाना खाने के बाद कुछ पीने की वाकई में इच्छा हो रही है तो सुबह के भोजन के बाद ऋतु अनुसार किसी भी फल का रस ले सकते हैं और दोपहर के भोजन के बाद छाछ या मठ्ठा ले सकते हैं। शाम के भोजन के बाद रात में दूध पीकर सोना सर्वोत्तम है।

भोजन करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम जब भी भोजन करें तो ज़मीन पर चौकड़ी मारकर ही करें क्योंकि हमारे कूल्हों के ऊपर एक चक्र होता है जिसका सीधा संबंध जठराग्नि से होता है इसलिए सुखासन अर्थात् चौकड़ी मारकर भोजन करने से जठराग्नि तेजी से काम करती है, परन्तु जब हम कुर्सी पर बैठकर या खड़े होकर भोजन करते हैं तो इसका ठीक उल्टा होता है। इसलिए कभी भी कुर्सी पर बैठकर या खड़े होकर भोजन नहीं करना चाहिए। आज की इस भागमभाग जिन्दगी में इतना समय मिलना बड़ा मुश्किल है कि हम प्रत्येक भोजन जमीन पर बैठ कर करें। इसके लिए दोस्तों मेरा आप सभी से सप्रेम आग्रह है कि हमें जब भी मौका मिले जमीन पर चौकड़ी मारकर भोजन करना चाहिए। इसमें हमें किसी प्रकार की शर्म नहीं करनी

चाहिए तथा हमेशा भोजन करने के बाद दस मिनट वज्रासन में अवश्य बैठें ताकि हमारा भोजन अच्छी तरह से अमाशय में पहुंच जाए।

ऋषि-मुनि तपस्वी लोग चौबीस घन्टे में केवल एक बार भोजन करते थे और दीर्घ आयु जीते थे। क्योंकि शरीर में बनने वाला पाचक रस पूर्ण रूप से उसी कार्य में लग जाता है। सामान्य रूप से हमें दिन में दो बार भोजन अवश्य करना चाहिए और अधिक से अधिक चौबीस घन्टे में तीन बार ही भोजन करना चाहिए, क्योंकि हम जितनी अधिक बार भोजन करते हैं, हमारा पाचक रस उतनी मात्रा में बंटता रहता है और पाचन की शक्ति कम होती जाती है। दोस्तों यदि हम अपने भोजन में इतना भी परिवर्तन कर लें तो हम काफी हद तक स्वस्थ रह सकते हैं।

****

"युग"

कु. रेशमा मजूमदार
बहन श्री शोमक मजूमदार
कम्प्यूटर आपरेटर
कोलकाता कार्यालय

कुछ अंगारों पे चलते है।
कोई अंगारों से खेलता है।
हम तो ठहरे अनारी,
राख से अपना दिल बहलाते है।

कुछ खंजरों से डरते है।
कोई चाकू से वार करता है।
हम अकेले बैठे,
बहते खून में अपना अक्स ढूंढते है।

वक़्त की तराज़ू पे तोलते है उसे,
जिसका किसी के नज़र में कोई मोल न हो।
हम वह है जिसकी किसी को भी न है कोई फ़िक्र,
युग है हम जिसका अंत हो, के भी अंत न हो।

*****

मानस उर्मि "उर्मिला"

पूजा कुमारी, डा.ए.आ.
अवस्थापना प्रभाग

पुरानी उक्ति है- "जिसके लिए जितना कम शब्द खर्च किया जाए वह अपने आप में उतना ही महत्वपूर्ण होता है।" उर्मिला के संबंध में यह उक्ति सटीक है। उर्मिला सीता की बहन, लक्ष्मण कि पत्नी और अयोध्या राजपरिवार की वधु थी। विडम्बना है कि रामचरितमानस में कवि शिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास ने मात्र तीन जगहों पर उर्मिला कि संक्षिप्त चर्चा की है। अवसर है राम-विवाह, वन-गमन और चित्रकूट में पारिवारिक मिलन।

मेरे विचार में उर्मिला राम-कथा की महानतम पात्री है। त्याग, पति भक्ति और लोकोपकार में वह सीता से भी आगे दिखती हैं। सीता ने परलोक के लिए लोक को छोड़ा जबकि उर्मिला ने लोक और परलोक के बीच लोक को चुना था। पति-भक्ति, पति-सेवा आदि नारी का परमधर्म माना जाता है और इससे इसके परलोक सुधारने की बात कही गयी है। मेरे ख्याल मे उर्मिला का त्याग सीता से अधिक है। सीता और उर्मिला दोनों नवविवाहिता हैं। सीता पति विछोह बर्दास्त नहीं कर सकीं और पति के साथ हो लीं। इनको वन-गमन का आदेश नहीं था और सबसे बड़ी वधु होने के कारण सास, ससुर आदि कि सेवा कि सेवा भी इनका पुनीत कर्तव्य था। सीता ने अपने लौकिक कर्तव्य की अनदेखी कर पति के साथ वन जाना उचित समझा था। एक अच्छी पत्नी होने के नाते उर्मिला बखूबी जानती थी कि लक्ष्मण अपने साथ उन्हे वन ले जाना पसंद नहीं करेंगें। इनके साथ जाने से लक्षमण को भातृ-सेवा और अन्य कर्तव्य पालन में बाधा होगी। इसलिए बतौर एक पति-भक्त नारी उसने न तो साथ वन ले चलने के लिए पति पर दवाब डाला और न कभी इसका उपालम्भ दिया। सीता ने इससे पूछा था- "मैं पति-वियोग की ज्वाला को सह न सकी, क्या तुम सहन कर लोगी?" उर्मिला ने जवाब दिया था -"दीदी आशीर्वाद दो की मैं सह सकूँ। मेरा अभीष्ट पति का सुख है। यहाँ विकल रहने से अच्छा आप लोगों के साथ वे जंगल में ही सुखी रहें।"

चित्रकूट में पारिवारिक मिलन के समय लक्ष्मण उर्मिला से बड़े सशंकित थे। पर, उर्मिला ने कोई शिकवा शिकायत की। मात्र इतना ही कहा की आपकी खुशी मेरी खुशी है। आप भातृ-सेवा में अटल रहें और मेरी चिंता न करें। पति-प्रेम और त्याग की यह परम पराकाष्ठा है।

उर्मिला ने अपने त्याग के बदौलत संसार को लक्ष्मण जैसा भातृ-भक्त, महान तपस्वी, इंद्रजीत विजेता, अप्रतीम वीर और युग धर्म निभाने वाला राजपुत्र दिया। बदले में संसार से उसने कुछ भी नहीं मांगा। अगर वो चाहती तो लक्ष्मण को वन जाने से रोक लेती या वन पाठ में इनके पल्ले बांध जाती। क्या इस स्थिति में राम-कथा में एक अलग मोड नहीं आ जाता?

उर्मिला राम-कथा विस्तार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। रामचरितमानस के रचयिता संत तुलसीदास की विवशता थी की अपने धिरोदात्त नायक राम और नायिका सीता के चरित्र को सबसे अधिक चमकदार बनाकर रखना। उर्मिला की विस्तृत चर्चा से सीता की पति-भक्ति एवं त्याग फीका पड़ जाता। सच तो यह है कि उर्मिला के पति-त्याग, पति-भक्ति एवं व्यापक सोच की नींव पर ही राम-कथा का विस्तार हो पाया है।

******

<u>लघु कथा</u>

घटना यूनान देश के थेरेस शहर की है। एक निर्धन बालक लकड़ी का एक गट्ठर लेकर बाजार बेचने पहुंचा। गट्ठर बड़ी कलात्मकता से बांधा गया था। उसकी कलात्मकता देखकर वहां से गुजर रहा प्रसिद्ध दार्शनिक डेमीक्रिट्स बड़ा प्रभावित हुआ। उसने बालक से पूछा कि गट्ठर किसने बांधा है? बालक ने उत्तर दिया कि उसी ने वह गट्ठर बांधा है। डेमीक्रिट्स को भरोसा न हुआ तो बालक ने गट्ठर खोलकर उसे दोबारा उसी तरह बांधकर दिखा दिया। डेमीक्रिट्स उस बालक को अपने साथ ले गया और उसकी पढ़ाई की व्यवस्था कर दी। यही प्रतिभाशाली बालक आगे चलकर महान दार्शनिक पाईथागोरस के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

*****

एलोवेरा एक संजीवनी

औषधी की दुनिया में एलोवेरा किसी चमत्कार से कम नहीं। एलोवेरा से तमाम रोग दूर किए जा सकते हैं। एलोवेरा औषधीय गुणों से परिपूर्ण है। एलोवेरा के जूस और एलोवेरा युक्त उत्पाद के सेवन और इस्तेमाल से फिट रहा जा सकता है। एलोवेरा एक संजीवनी है यानी इसमें संजीवनी बूटी के सभी गुण मौजूद हैं। आइए जानें आखिर एलोवेरा है क्या।

- एलोवेरा एक ऐसा पौधा है जिसमें अन्य सभी जड़ी-बूटियों के मुकाबले अधिक गुण है। यानी व्यक्ति को फिट रखने में एलोवेरा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता हैं।
- एलोवेरा के पौधे के कई नाम हैं, जैसे संजीवनी बूटी, साइलेंट हीलर, चमत्कारी औषधि। इसे कई अन्य नामों जैसे ग्वारपाठा, क्वारगंदल, घृतकुमारी, कुमारी, घी-ग्वार इत्यादि से भी पुकारा जाता है।
- कब्ज़ से लेकर कैंसर तक के मरीजों के लिए एक अत्यंत लाभकारी औषधि है।
- एलोवेरा में वो औषधीय तत्व हैं जो शरीर में नहीं बनते बल्कि एलोवेरा से ही प्राप्त होते हैं जैसे– कुछ खनिज, अमीनो एसिड। इन तत्वों को निरंतर शरीर की जरूरत रहती है जिसे पूरी करना भी जरूरी है।
- एलोवेरा बढ़िया एंटीबायोटिक और एंटीसेप्टिक के रूप में काम करता है।
- एलोवेरा में शरीर की अंदरूनी सफाई करने और शरीर को रोगाणु रहित रखने के गुण भी मौजूद है।
- एलोवेरा हमारे शरीर की छोटी बड़ी नस, नाड़ियों की सफाई करता है उनमें नवीन शक्ति तथा स्फूर्ति भरता है।
- यह बैक्टीरिया नाशक है साथ ही मेटाबॉलिक प्रक्रिया को ठीक करता है।
- शरीर में मौजूद हृदय विकार, जोड़ों के दर्द, मधुमेह, यूरीनरी प्रॉब्लम्स, शरीर में जमा विषैले पदार्थ इत्यादि को नष्ट करने में मददगार है।
- त्वचा की देखभाल और बालों की मजबूती व बालों की समस्या से निजात पाने के लिए एलोवेरा एक संजीवनी का काम करती है।
- बच्चे से लेकर वरिष्ठ लोगों तक सभी के लिए एलोवेरा किफायती है। इसके प्रयोग से बीमारियों से मुक्त रहकर लंबी उम्र तक स्वस्थ और फिट रहा जा सकता है।

******

– कुमारी रिद्धिमा शर्मा
सुपुत्री श्रीमती गीता शर्मा
उप प्रबंधक (रा.भा.)

माखनलाल चतुर्वेदी

(04 अप्रैल 1889 से 30 जनवरी 1968)

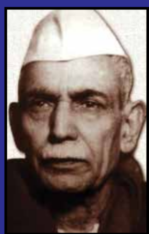

माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म 04 अप्रैल 1889 बावई, होशंगाबाद (म.प्र.) में हुआ। इन्होंने हिंदी एवं संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन किया। वे भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। वे कर्मवीर राष्ट्रीय दैनिक के संपादक थे। इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। इनका उपनाम 'एक भारतीय आत्मा है। मुख्य कृतियां हैं- 'हिम-किरीटिनी, 'हिम-तरंगिनी (कविता संग्रह), 'साहित्य-देवता (गद्य काव्य) तथा 'कृष्णार्जुन युद्ध (नाटक)। 'हिम-तरंगिनी पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। राष्ट्रीयता इनके काव्य का कलेवर है तथा रहस्यात्मक प्रेम उसकी आत्मा।

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध
प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक!

वाप्कोस लिमिटेड
(भारत सरकार का उपक्रम)
जल शक्ति मंत्रालय
(A Government of India Undertaking)
Ministry of Jal Shakti

पंजीकृत कार्यालय : 'कैलाश', 5वां तल, 26 कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
दूरभाष : 011-23313131-3, फैक्स : 011-23313134
निगमित कार्यालय : 76-सी, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर-18, गुरुग्राम-122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124-2340548 फैक्स : 0124-2397392
ई-मेल : hindi@wapcos.co.in वेबसाईट : http://www.wapcos.co.in